# रबड़ समाचार बुलेटिन

सितंबर-दिसंबर 2023

# हिंदी

भारत-जननी एक हृदय हो !
एक राष्ट्रभाषा हिंदी में, कोटि-कोटि जनता की जय हो !

स्नेह-सिक्त मानस की वाणी, गूंजे गिरा यही कल्याणी,
चिर उदार भारत की संस्कृति, सदा अभय हो, सदा अजय हो !

मिटे विषमता, सरसे समता, रहे मूल में मीठी ममता,
तमस्-कालिमा को विदीर्ण कर जन-जन का पथ ज्योतिर्मय हों !

जाति, धर्म, भाषा, विभिन्न स्वर, एक राग हिंदी में सजकर,
झंकृत करें हृदय-तंत्री को, स्नेह-भाव प्राणों में लय हो !

***चुने हुए राष्ट्रीयगीत से साभार***

# रबड़ बोर्ड

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
कोट्टयम - 686 002, केरल
पी बी नं.1122
दूरभाष : (0481) 2301231
फैक्स : 91 481 2571480
ई मेल : ol@rubberboard.org.in
वेब साइट : www.rubberboard.org.in

# रबड़ समाचार बुलेटिन

सितंबर-दिसंबर 2023 *अंक 135*



*अध्यक्ष*
**डॉ. सावर धनानिया**

---

*कार्यकारी निदेशक*
**एम वसंतगेशन आई आर एस**

---

*संपादक*
**जी सुनील कुमार**
*सहायक निदेशक (रा भा)*

---

*सहायक संपादक*
**एम श्रीविद्या**
*वरिष्ठ हिंदी अनुवादक*

---

*संपादन सहयोग*
**सिसिली पी एस**
*हिंदी सहायक*

---

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से रबड़ बोर्ड का सहमत होना आवश्यक नहीं है। बिक्री के लिए नहीं केवल आंतरिक परिचालन के लिए।


---

**खुद वो बदलाव बनिए जो दुनिया में आप देखना चाहते हैं।**
*- महात्मागाँधी*

---

मुख पृष्ठ :
रबड़ पेड का वर्षा रक्षण

---

अंतिम पृष्ठ का चित्रकार -
***नवनीत वी नायर,***
*सुपुत्र, श्रीमती रती देवी सी जी,*
*क. सहायक ग्रेड1*

---

## इस अंक में


| | |
|---|---|
| स्थिरता के लिए मिलकर प्रयास करें | 4 |
| ए एन आर पी सी की वार्षिक बैठकें गुवाहाटी में संपन्न | 5-6 |
| मीठी यादें | 7 |
| हिंदी पखवाडा समारोह-2023 | 8-10 |
| रबड़ बोर्ड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन | 11 |
| रबड़ काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला को एन ए बी एल मान्यता | 12 |
| भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए | 13 |
| सेवानिवृत्तियां | 14 |
| मेघालय की रबड़ खेती और जेंगिचक्रे जिला विकास केंद्र | 15-17 |
| महिला शाक्तीकरण के लिए जेंडर बजटिंग | 18-19 |
| योजना, विपणन और प्रशिक्षण विभाग | 20-25 |
| हिंदी: एक विश्वस्तरीय संपर्क भाषा | 26-27 |
| स्वच्छ भारत | 27 |
| बाढ़ और भूस्खलन की आशंका वाले स्थानों के बारे में जानने के लिए वेब जीआईएस पोर्टल | 28-29 |
| थोड़ा सा ध्यान देने से निवल लाभ में सुधार हो सकता है | 30-31 |
| रबड़ शब्दावली | 32-33 |
| राजभाषा नियम 1976 | 34-35 |
| रसोई घर | 35 |
| हिंदी दिवस समारोह | 36-38 |

# स्थिरता के लिए मिलकर प्रयास करें

प्राकृतिक रबड़ उत्पादक राष्ट्रों का अंतर्राष्ट्रीय एसोसिएशन (एएनआरपीसी), के वर्ष 2023 का वार्षिक रबड़ सम्मेलन और असेंब्ली बैठकों की मेजबानी भारत ने की थी। भारत, बांग्लादेश, कंबोडिया, चीन, इंडोनेशिया, मलेशिया, म्यानमर, पापुआ न्यू गिनिया, फिलीपींस, सिंगपुर, श्रीलंका, थाईलैंड और वियतनाम जैसे 13 राष्ट्र अब एएनआरपीसी के सदस्य राष्ट्र हैं। प्राकृतिक रबड़ का लगभग 84 प्रतिशत उत्पादन और लगभग 70 प्रतिशत उपभोग इन राष्ट्रों द्वारा करते हैं। इसलिए, प्राकृतिक रबड़ उत्पादक क्षेत्र का संरक्षण और उसे बनाए रखने के लिए आवश्यक नीति निर्माण करना एएनआरपीसी का प्रमुख उद्देश्य है।

कम उत्पादकता, उत्पादन की बढ़ती लागत, रोग का प्रकोप, जलवायु परिवर्तन आदि जैसी समस्याओं का सामना लगभग सभी रबड़ उत्पादक राष्ट्र समान रूप से कर रहे हैं। वनों की कटाई को रोकने से संबंधित कृषि उत्पादों पर यूरोपीय संघ के नियंत्रण रबड़ व्यापार श्रृंखला के सामने आने वाली नई चुनौतियों में से एक हैं। सामूहिक प्रयासों से ही ऐसी समस्याओं का समाधान संभव है। ऐसे प्रयासों का नेतृत्व करने के लिए एएनआरपीसी जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का हस्तक्षेप आवश्यक है।

यही वह परिदृश्य है जो गुवाहाटी में आयोजित एएनआरपीसी की 54वीं कार्यकारी समिति को उल्लेखनीय बनाता है। रबड़ कृषि उद्योग के आर्थिक, सामूहिक, पर्यावरणीय पहलुओं को सुस्थिर बनाते हुए दुनिया भर के रबड़ कृषकों को राहत देने वाले प्रस्ताव इस वर्ष की समिति में आए हैं, जो आशा देने वाली है।

इनमें से सबसे महत्वपूर्ण निर्णय यह है - वनों की कटाई पर नियंत्रण के संबंध में प्राकृतिक रबड़ उत्पादों पर लगाए व्यापार नियमों में ढील देने के लिए यूरोपीय संघ से अनुरोध करने का एसोसिएशन का निर्णय। एसोसिएशन, व्यापार नियंत्रण के लिए अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान करता है। वैश्विक रबड़ नीतियों में बदलाव आने से रबड़ कृषि क्षेत्र के अस्तित्व को और सुरक्षित करने की उम्मीद की जा सकती है।

अगले एक वर्ष के लिए एएनआरपीसी की अध्यक्षता करने का अवसर भारत को दिया गया है। हमारे रबड़ क्षेत्र को ज़रूर इससे अधिक लाभ प्राप्त होगा।

शुभकामनाओं के साथ,

**एम वसंतगेशन आई आर एस**
*कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड*

# ए एन आर पी सी की वार्षिक बैठकें गुवाहाटी में संपन्न

रबड़ उत्पादक राष्ट्रों का अंतर्राष्ट्रीय संघ ए एन आर पी सी (प्राकृतिक रबड़ उत्पादक राष्ट्रों का संघ) की 13वीं अंतर्राष्ट्रीय वार्षिक बैठक का उद्घाटन गुवाहाटी के होटल राडिसन ब्लू में आयोजित संपन्न समारोह में रबड़ बोर्ड के अध्यक्ष डॉ सावर धनानिया ने किया। रबड़ क्षेत्र से जुडे सामान्य मुद्दों के समाधान के लिए सुसंगत नीति निर्माण के लिए ए एन आर पी सी को पहल लेना चाहिए, डॉ धनानिया ने कहा। उन्होंने आगे कहा कि विश्व स्तर पर किसान रबड़ की खेती तभी जारी रख सकते हैं, जब वे रबड़ कृषि क्षेत्र के मशीनीकरण, टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल खेती के तरीकों, उत्पादन और उपभोग श्रृंखला के शाक्तीकरण और रबड़ के काष्ठ के मूल्य में वृद्धि का अधिकतम लाभ उठाएं।

रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम. वसंतगेशन आई आर एस ने उम्मीद जताया कि रबड़ सम्मेलन में होने वाली चर्चाओं से सभी के लिए स्वीकार्य समाधान खोजने में मदद मिलेगी क्योंकि रबड़ क्षेत्र में वर्तमान में मौजूद सभी समस्याएं अन्य सभी रबड़ उत्पादक राष्ट्रों के लिए समान हैं। एएनआरपीसी के अध्यक्ष और मलेशियाई रबड़ बोर्ड के महानिदेशक दातो डॉ. सरोइसानी बिन मोहम्मद नोर ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। एएनआरपीसी के महासचिव तोह हेंग गुआन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

रबड़ बोर्ड के उपाध्यक्ष के ए उण्णिकृष्णन, कार्यकारी समिति सदस्य एन हरि भी बैठक में मौजूद थे।

असम सरकार का प्रतिनिधित्व करके उद्योग मंत्री बिमल बोरा सम्मेलन में उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि उम्मीद है कि रबड़ बोर्ड और टायर कंपनियों के एसोसिएशन द्वारा राज्य में कार्यान्वित की जा रही ***इनरोड*** परियोजना से प्राकृतिक रबड़ के उत्पादन और उसके द्वारा संबंधित उद्योगों में आगे बढने में असम को मदद मिलेगी।

रबड़ सम्मेलन का सामान्य विषय *प्राकृतिक रबड़ उद्योग - 21वीं सदी में चुनौतियाँ और नीति विकल्प* था। इसके बाद आयोजित विभिन्न सत्रों में ए एन आर पी सी महासचिव तोह हेंग गुआन ने *प्राकृतिक रबड़ के दृष्टिकोण* विषय पर, आसियान के कृषि सलाहकार एरोल परेरा ने कृषि क्षेत्र में स्थिरता और चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में आसियान के प्रयास और रबड़ क्षेत्र के लिए इसकी प्रासंगिकता पर, ऑटोमोटिव टायर मन्युफैक्चर्स एसोसिएशन के महानिदेशक राजीव बुधराजा ने भारत में प्राकृतिक रबड़ क्षेत्र की चुनौतियां - उत्तर पूर्व भारत में प्राकृतिक रबड़ बागानों से जुडी अनूठी इनरोड परियोजना की अंतर्दृष्टि विषय पर और हुआंग षूलिन ने सिकॉम कैसे प्राकृतिक रबड़ के लिए एक विश्वसनीय मूल्य खोज केंद्र बन सकता है विषय पर लेख प्रस्तुत किए।

प्राकृतिक रबड़ की सतत आपूर्ति - चुनौतियां और समाधान, प्राकृतिक रबड़ के भाव और मांग में सुधार के उपाय विषय में क्रमशः केरल रबड़ लिमिटेड की अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक षीला तोमस (आई ए एस - सेवानिवृत्त), अंतर्राष्ट्रीय रबड़ अध्ययन ग्रूप के महासचिव प्रोफसर जोसफ अडलेगान आदि मोडरेटर थे।

भारत, बांग्लादेश, कंबोडिया, चीन, इंडोनेशिया, मलेशिया, म्यांमार, पापुआ न्यू गिनिया, फिलीपींस, सिंगापुर, श्रीलंका, थाईलैंड और वियतनाम सहित 13 देश अब एएनआरपीसी के सदस्य राष्ट्र हैं। केंद्र सरकार ने जी - 20 की साइड मीटिंग के तौर पर इस कार्यक्रम को मंजूरी दे दी है।

अंतर्राष्ट्रीय समझौतों के लागू होने के बाद, रबड़ की खेती की गतिशीलता सभी उत्पादक राष्ट्रों में लगभग एक जैसी रही है। इसी तरह, रबड़ क्षेत्र में संकट स्थिति का सामना भी सभी उत्पादक राष्ट्रों को एक साथ करना होगा। रबड़ की कम कीमत, बढ़ी हुई श्रम लागत, श्रमिकों की कमी, बीमारियाँ, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय समस्याएँ आदि समस्याएं जिनका सामना सभी राष्ट्र कर रहे हैं। अतः इन सबका समाधान सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। इस संदर्भ में, ऐसी चर्चाओं को शामिल करके एएनआरपीसी द्वारा आयोजित वार्षिक सम्मेलन रबड़ क्षेत्र के लिए लाभदायक होगा।

एएनआरपीसी का लक्ष्य प्राकृतिक रबड़ क्षेत्र का समग्र विकास करना है। रबड़ उत्पादक राष्ट्रों में स्थिति का आकलन करने और क्षेत्र में हितधारकों के बीच आपस में विचार विमर्श की सुविधा प्रदान करने में एएनआरपीसी प्रमुख भूमिका निभाता है। वार्षिक रबड़ सम्मेलन जैसे सार्वजनिक मंचों पर होने वाले विचार विमर्श इस क्षेत्र के लिए नीति निर्माण की सुविधा प्रदान करता है। जिन प्रमुख मुद्दों को हल करने की आवश्यकता होती है उन्हें प्रत्येक वर्ष की वार्षिक बैठकों में चर्चा के विषय के रूप में चुना जाता है। कोविड महामारी और रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण उत्पन्न वैश्विक मंदी अभी भी जारी है। इसलिए, इस वर्ष का विषय प्राकृतिक रबड़ उद्योगः चुनौतियां और 21वीं सदी में नीति विकल्प' विशेष महत्व रखता है।

भारत के लिए अब विकास के प्रयास बड़े पैमाने पर जारी हैं। हम, रबड़ सहित सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता हासिल करने का प्रयास कर रहे हैं। देश के लिए आवश्यक रबड़ का उत्पादन करने के प्रयासों के तहत, रबड़ की खेती को असम सहित उत्तर पूर्वी राज्यों में फैलाने के लिए टायर निर्माताओं के संगठन ***आत्मा*** की मदद से *इनरोड* नामक एक रबड़ खेती विकास परियोजना कार्यान्वित की जा रही है। सम्मेलन ने रबड़ उत्पादक देशों में रबड़ की खेती से संबंधित रबड़ प्रबंधन, अनुसंधान, प्रशिक्षण और विपणन में हुई प्रगति को एक दूसरे के साथ साझा करने का अवसर प्रदान किया।

# भारत को एएनआरपीसी का अध्यक्ष पद

रबड़ उत्पादक राष्ट्रों का अंतर्राष्ट्रीय संघ एएनआरपीसी (प्राकृतिक रबड़ उत्पादक राष्ट्रों का संघ) का अध्यक्ष पद भारत को। गुवाहाटी में आयोजित 45वें एएनआरपीसी असेंब्ली में भारत का प्रतिनिधित्व करके रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम वसंतगेशन आई आर एस ने मलेशिया सरकार के प्लान्टेशन्स एंड कमोडिटी मंत्रालय के उप महासचिव, दातो सैलानी बिन हाजी हाशिम से अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया। अध्यक्ष पद का कार्यकाल एक वर्ष का होता है।

वर्तमान में 13 प्राकृतिक रबड़ उत्पादक राष्ट्र एएनआरपीसी में सदस्य हैं। एएनआरपीसी के वर्तमान सदस्य राष्ट्र बांग्लादेश, कंबोडिया, चीन, भारत, इंडोनेशिया, मलेशिया, म्यांमार, पापुआ न्यू गिनिया, फिलीपींस, सिंगापुर, श्रीलंका, थाईलैंड और वियतनाम हैं। वैश्विक रबड़ उत्पादन का 84 प्रतिशत हिस्सा एएनआरपीसी सदस्य राष्ट्रों से हैं। भारत की मेजबानी में इस वर्ष के दौरान आयोजित एएनआरपीसी सम्मेलन अक्तूबर 9 से 13 तक गुवाहाटी में आयोजित किए गए।

---

# मीठी यादें

**(कविता)**

**श्रीमती सिनी जे**
कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1
योजना प्रभाग


एक उज्ज्वल धूप वाला दिन
मुझे मिला प्रिय मित्र को
पच्चीस वर्षों के बाद।

मेरा दिल खुशी से भर गया
आंखें चमकने लगीं।

पुरानी यादें, प्यारी सी मस्तियां
दोस्तों की गुपचुप बातें
मन में लहराईं।

कहा - तुम बिलकुल वैसे ही
दिखते हो जैसे मुझे याद था।
फिर से मिलकर, खुले दिल के किनारे
एहसास हुआ हमारी लगाव
अब भी हमेशा जवान है।।

# हिंदी पखवाडा समारोह-2023

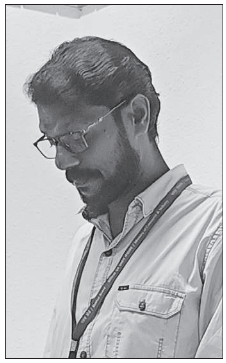

संघ की राजभाषा नीति अमल में लाने के लक्ष्य से रबड़ बोर्ड में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसी सिलसिले में हर वर्ष बोर्ड के मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान एवं राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान में हिंदी पखवाडा समारोह का तथा बोर्ड के अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2023 के दौरान भी बोर्ड के कार्यालयों में हिंदी पखवाडा समारोह एवं हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया।

पखवाडे के दौरान मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। सभी पदधारियों को शामिल कराने के उद्देश्य से वर्तनी, हिंदी खंड लेखन और वार्तालाप प्रतियोगिताएं भी आयोजित की थीं। अधिक से अधिक प्रतिभागियों को इनमें शामिल कराने का भी प्रयास किया गया। इस वर्ष की प्रतियोगिताओं में मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान से करीब 300 पदधारी भाग लिये। प्रतियोगिताओं के निर्णायक के रूप में बोर्ड से बाहर के हिंदी से जुडे विशेषज्ञ व्यक्तियों को आमंत्रित किया।

## हिंदी पखवाडा समारोह - 2023 - विविध प्रतियोगिताओं के परिणाम

**1. भाषण (महिला)**

श्री/श्रीमती

प्रथम : एम मंजुला, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1

द्वितीय : सी ई जयश्री, प्रयोगशाला सहायक

तृतीय : सिनी जे, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1

प्रिया वर्मा एच, प्रभारी अधिकारी (र बा वि प्र)

भाषण (पुरुष)

प्रथम : जोसफ पी एस, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1
द्वितीय : बापधन डेका, सहायक सचिव (ह)
तृतीय : टोणी साबु पोल, सहायक विपणन अधिकारी
विशेष : सुनिल कुमार पी आर, सहायक

2. हस्तलिपि

प्रथम : बीना वी, सहायक, स्थापना अनुभाग
तृप्ति सी एल, सांख्यिकीय निरीक्षक
सजिया कृष्णकुमार, अनुभाग अधिकारी

द्वितीय : पुष्पकुमारी आर, लेखा अधिकारी
सविता एन, वैज्ञानिक सहायक
जयश्री टी, क.वैज्ञानिक अधिकारी
मिनी जे पल्लिप्परंबिल, क.वैज्ञानिक अधिकारीं

तृतीय : ट्विन्सी तोमस, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1
श्रीबिंदु आर एस, वैज्ञानिक सहायक
सुमिता पी पी, प्रक्षेत्र सहायक
सुशीला वी ए, प्रयोगशाला सहायक
षीजा ई, आशुलिपिक ग्रेड 1
निषिता पी, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1

विशेष : मुरुकराजन एस, बैरा,
डॉ. गीता जोस, क.वैज्ञानिक अधिकारी
स्वप्ना कुमारी ए, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1
स्मिता सी जी, परिचर
षीनामोल बी, स.प्रणाली अधिकारी
सतीना सी बी, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1

3. प्रश्नोत्तरी

प्रथम : लीना के के, क.वैज्ञानिक अधिकारी एवं मिनी जे पल्लिप्परंबिल, क.वैज्ञानिक अधिकारी

द्वितीय : प्रदीप सी, क.सहायक ग्रेड 1 एवं लेखा एस, क.सहायक ग्रेड 1

तृतीय : सी एन प्रदीप कुमार, क.सहायक ग्रेड 1 एवं सी ई जयश्री, प्रयोगशाला सहायक

4. अंताक्षरी

प्रथम : लीनाकुमारी एस, सहायक
पुष्पकुमारी आर, लेखा अधिकारी
लीना के के, क. वैज्ञानिक अधिकारी
जोसफ पी एस, क.सहायक ग्रेड 1
द्वितीय : सुनिता मत्ताई, क.सहायक ग्रेड1
तृतीय : सविता एन, वैज्ञानिक सहायक
विशेष : लैसम्मा जोसफ, सहायक सचिव
उषा जी मेनोन, सहायक

5. टिप्पण एवं आलेखन

प्रथम : लीनाकुमारी एस, सहायक
द्वितीय : पुष्पकुमारी आर, लेखा अधिकारी
एस मल्लिका अम्मा, अनुभाग अधिकारी
तृतीय : निषिता पी, क.सहायक ग्रेड 1
सुजाता एस, क.सहायक ग्रेड 1
सुनिल कुमार पी आर, सहायक
एस एस बिंदु, क.सहायक ग्रेड 1

6. निबंध लेखन

प्रथम : लीनाकुमारी एस, सहायक
एस एस बिंदु, क.सहायक ग्रेड 1

द्वितीय : पुष्पकुमारी आर, लेखा अधिकारी
सिनी जे, क. सहायक ग्रेड 1

तृतीय : सी ई जयश्री, प्रयोगशाला सहायक
निषिता पी, क.सहायक ग्रेड 1

विशेष : एस मल्लिका अम्मा, अनुभाग अधिकारी

7.टंकण

प्रथम : नसीफ ए यु, क.सहायक ग्रेड 1
जिजी पी जोण, आशुलिपिक ग्रेड 1
द्वितीय : लैसम्मा जोसफ, सहायक सचिव
तृतीय : अनिल कुमार एम एस, क.सहायक

8. कवितालापन (महिला)

प्रथम : सी ई जयश्री, प्रयोगशाला सहायक
द्वितीय : प्रिया वर्मा एच, प्रभारी अधिकारी (रबाविप्र)
तृतीय : सिनी जे, क. सहायक ग्रेड 1
निषिता पी, क. सहायक ग्रेड 1
शोभा ए.एन, क.सहायक ग्रेड 1
विशेष : श्रीबिंदु आर एस, वैज्ञानिक सहायक

कवितालापन (पुरुष)

प्रथम : जोसफ पी एस, क.सहायक ग्रेड 1
द्वितीय : सुबाष चंद्र मल्लिक, उप सचिव

तृतीय : बापधन डेका, सहायक सचिव (ह)
सच्चिदानंद कबि, स्टाफ कार चालक ग्रेड 1

**9. हिन्दी गीत (महिला)**

प्रथम : प्रिया वर्मा एच, प्रभारी अधिकारी (रबाविप्र)
द्वितीय : निषिता पी, क.सहायक ग्रेड 1
तृतीय : लीनाकुमारी एस, सहायक

**हिन्दी गीत (पुरुष)**

प्रथम : टी आर अनिलकुमार, मेकानिक
द्वितीय : षिन्टो मात्यु, बैरा
तृतीय : सच्चिदानंद कबि, स्टाफ कार चालक ग्रेड 1
विशेष : एस सुरेष, परिचर

**10. समाचार वाचन (महिला)**

प्रथम : निसरी त्यागराज, क.सहायक ग्रेड 1
द्वितीय : निषिता पी, क.सहायक ग्रेड 1
तृतीय : एस एस बिंदु, क.सहायक ग्रेड 1
विशेष : जयश्री टी, क.वैज्ञानिक अधिकारी

**समाचार वाचन (पुरुष)**

प्रथम : बापधन डेका, सहायक सचिव (ह)
द्वितीय : टोणी साबु पोल, सहायक विपणन अधिकारी
तृतीय : जोसफ पी एस, क.सहायक ग्रेड 1
विशेष : सुनिल कुमार पी आर, सहायक
सच्चिदानंद कबि, स्टाफ कार चालक ग्रेड 1

**11. स्मरणशक्ति परीक्षा**

प्रथम : लेखा एस, क.सहायक ग्रेड 1
जोसफ पी एस, स्टाफ कार चालक ग्रेड 1
प्रिया वर्मा एच, प्रभारी अधिकारी (रबाविप्र)
श्रीबिंदु आर एस, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय : सुजाता एस, क.सहायक ग्रेड 1
सिनी जे, क. सहायक ग्रेड 1.
स्मिता सी जी, परिचर
लीना के के, क.वज्ञानिक अधिकारी
तृतीय : बाबुराज ई जी, उ.शुल्क निरीक्षक
राजश्री एम, सहायक विपणन अधिकारी
विशेष : सूसी पी पी, सहायक
सुरेषकुमार टी, स्टाफ कार चालक

कविता

# जीवन का लाभ

**सिसिली पी एस**
हिंदी सहायक
हिंदी अनुभाग

भृंग की प्रतीक्षा में वह सब कुछ भूल गई।
हल्की हवा ने उससे पूछा हम दोस्ती करें
छोटी चिडिया ने उससे पूछा हम खेल खेलें
पर वह अपनी महक पर घमंड थी,
चारों ओर के सब कुछ नजरअंदाज किया।
भृंग आया दोनों प्यार में लग्न हुए।
प्रिय के प्रेम प्रदर्शन में फूल अपने आप को भूल गयी।
प्रिया से मधु पीकर भृंग छोड गया।
प्रेमी की यादों में वह अभिभूत हूई।
प्रणयिनी के इंतज़ार के बाद भृंग वापस आया।
फूल प्रिय को देखकर रोमांचित हो गई।
लेकिन भृंग नये कुसुमों की ओर जा रहा,
नये मधु पीकर वह लौट गया।
अपने मन में भर गये सभी अरमान
एक पल में खोये हुए फूल निश्चेष्ट हो गया।
छोटी चिडिया ने अपने छोटे चोंच से
फूल के गाल को सहलाया।
हल्की हवा ने अपने कोमल हाथ से
फूल के चेहरे पर थपथपाई।
दोस्तों ने फूल से कहा, हे सुंदर पुष्प।
तुम्हारा जीवन आपके लिए है, दूसरों हेतु नष्ट मत करो
तुम्हारी ज़िंदगी इस दुनिया को अमूल्य है।
जियो, सुगंध फैलाते हुए जियो।

# रबड़ बोर्ड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

केंद्रीय सतर्कता आयोग के मार्गदर्शन पर रबड़ बोर्ड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया। इस वर्ष के सतर्कता जागरूकता सप्ताह का पालन 30 अक्तूबर 2023 को रबड़ बोर्ड के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा शपथ ग्रहण समारोह के साथ शुरू हुआ। पदधारियों द्वारा सीवीसी वेबसाइट पर ई-प्रतिज्ञा भी ली गई। भ्रष्टाचार का विरोध करें राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें विषय पर केंद्रीय विद्यालय, कोट्टयम में उच्च माध्यमिक और माध्यमिक छात्रों की भागीदारी के साथ अंग्रेजी में भाषण प्रतियोगिता और पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गईं। कोट्टयम और उसके आसपास के कार्यालयों में कार्यरत रबड़ बोर्ड के पदधारियों के लिए एक निबंध लेखन और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। बोर्ड ने कोट्टयम के आसपास स्थित कॉलेजों के एनएसएस स्वयंसेवकों के साथ मिलकर एक मिनी मैरथॉन भी आयोजित किया। इसके अलावा, रबड़ बोर्ड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के हिस्से के रूप में, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान ने 4 सितंबर से 12 सितंबर 2023 तक रबड़ बोर्ड के पदधारियों के लिए विभिन्न विषयों पर एक सप्ताह तक चले ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम की मेजबानी की।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह समारोह के समापन सत्र का उद्घाटन पुलिस अधीक्षक एवं कोट्टयम जिला पुलिस प्रमुख श्री के कार्तिक आई पी एस ने किया। उन्होंने अपने मुख्य अभिभाषण में कहा कि, जो युवा नागरिक-चित्त वाले हैं और भ्रष्टाचार के खिलाफ समझौता नहीं करते हैं, वे देश में बदलाव ला सकते हैं। उन्होंने आगे कहा, सरकार समाज का हिस्सा है और इसलिए भ्रष्टाचार के खिलाफ समाज की मानसिकता को बदलना सबसे महत्वपूर्ण है।

रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक श्री एम. वसंतगेशन आई आर एस ने स्वागत भाषण किया। उन्होंने अपने भाषण में बताया कि जनता के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए सतर्कता जागरूकता सप्ताह जैसे सभी कार्यक्रम अंततः बच्चों तक पहूंचने चाहिए और इसी कारणवश इस सिलसिले में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिए सभी बच्चे विशेष प्रशंसा के पात्र हैं। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के सिलसिले में आयोजित विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं के लिए पुरस्कारों का वितरण समारोह के दौरान किया गया। श्रीमती पी श्रीविद्या, सहायक सतर्कता अधिकारी ने समारोह में कृतज्ञता ज्ञापित की।

# रबड़ काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला को एन ए बी एल मान्यता

रबड़ बोर्ड के अधीन केंद्रीय काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला (सीडब्ल्यूटीएल) को राष्ट्रीय परीक्षण और अंशशोधन प्रयोगशाला प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीएल) द्वारा मान्यता प्रदत्त की। इसकी वैधता जून 2023 से दो वर्ष लिए है। कोट्टयम में भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान में आयोजित एक समारोह में रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक श्री एम वसंतगेशन आई आर एस ने केंद्रीय काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला के प्रभारी इंजीनियरी एवं संसाधन प्रभाग के संयुक्त निदेशक पी अरुमुगम को मान्यता प्रमाण पत्र सौंप दिया। प्रयोगशाला प्रभारी अधिकारी जी उमाशंकर एवं संस्था के अन्य कर्मचारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। विस्तृत प्रलेखन, आईएसओ 17025 मानक विनियमों और अन्य प्रभावी दिशानिर्देशों के माध्यम से एन ए बी एल, प्रयोगशाला की गतिविधियों में बेहतर नियंत्रण सुनिश्चित करता है।

संसाधित रबड़ काष्ठ की गुणता नियंत्रण के उद्देश्य से वर्ष 2000 में रबड़ काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला की स्थापना की गई थी। बाद में प्लाइवुड, दरवाजे और ब्लॉक बोर्ड जैसे रबड़ काष्ठ से संबंधित उत्पादों के परीक्षण को शामिल करते हुए इसका नाम बदलकर केंद्रीय काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला कर दिया गया। इस प्रयोगशाला को सॉलिडवुड, प्लाइवुड और दरवाजों के यांत्रिक परीक्षण सहित 46 विभिन्न मानदण्डों के अनुसार परीक्षण करने लिए मान्यता प्राप्त है। काष्ठ के परीक्षण के लिए सर्वोत्तम उपकरण यहां उपलब्ध हैं। प्रयोगशाला में यांत्रिक, रासायनिक और संरचनात्मक विषयों में सटीक और त्वरित परीक्षण परिणाम प्रदान करने के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं भी हैं। कई प्रमुख शोध संस्थान अपने शोध से संबंधित परीक्षण के लिए और इंजीनियरी और विज्ञान के छात्र अपनी शैक्षणिक परियोजनाओं के लिए प्रयोगशाला की सेवाओं का उपयोग करते हैं।

# भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए

रबड़ क्षेत्र से संबंधित अनुसंधान और विकास क्षेत्रों में आपसी सहयोग के साथ कार्य करने के लिए रबड़ बोर्ड के अधीन भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के अधीन राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। दोनों संगठनों के उद्देश्यों के अनुसार काम करने के लिए भविष्य की परियोजनाओं से संबंधित समझौतों को लागू करने के लिए इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। समझौता ज्ञापन में वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मियों का पारस्परिक उपयोग, प्रशिक्षण और तकनीकी सेवाओं का प्रावधान, बौद्धिक संपदा के पारस्परिक उपयोग की अनुमति प्राप्त करना और उत्पाद विकास के लिए सुविधाओं का पारस्परिक साझाकरण शामिल है।

डॉ. सावर धनानिया (अध्यक्ष, रबड़ बोर्ड), एम वसंतगेशन आई आर एस (कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड), डॉ. सी अनंतरामकृष्णन (निदेशक सीएसआईआर - राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान), के.ए. उण्णिकृष्णन (उपाध्यक्ष, रबड़ बोर्ड), डॉ. एम डी जेसी (प्रभारी निदेशक अनुसंधान, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान) डॉ. सिबी वर्गीस (प्रभारी निदेशक प्रशिक्षण, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान), के एन मधुसूदनन (प्रधान वैज्ञानिक, भारअसं), जॉय जोसफ (वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारअसं), डॉ. मनोज कुर्यन जेकब (वैज्ञानिक, भारअसं) आदि समारोह में उपस्थित थे।

# कंठस्थ - 2.0 पर कार्यशाला

कंठस्थ 2.0, ट्रांसलेशन मेमोरी तथा न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित मशीन साधित अनुवाद प्रणाली है। इस अनुवाद प्रणाली से अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है । स्मृति आधारित इस अनुवाद प्रणाली की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें यूजर द्वारा किए गए अनुवाद कार्य को संगृहीत किया जाता है जिसे किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुनः प्रयोग किया जा सकता है। अधिकतर पदधारियों तक कंठस्थ 2.0 की पहूंच के उद्देश्य हेतु रबड़ बोर्ड ने दिनांक 19.10.2023 को बोर्ड के पदधारियों और कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के पदधारियों के लिए एक अर्ध दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की। श्री प्रशांत जी पै, वरिष्ठ प्रबंधक (रा भा), कैनरा बैंक द्वारा कक्षा चलाई गई। ज्यादातर पदधारियों में इसपर जागरूकता पौदा करने के लिए हाइब्रिड मोड पर कक्षा की व्यवस्था की थी।

## सेवानिवृत्तियां

### सितंबर 2023

**श्री प्रशांत बरुवा**
विकास अधिकारी

**श्रीमती मरियाम्मा वी के**
अनुभाग अधिकारी

### नवंबर 2023

**श्रीमती मीना एस**
वैज्ञानिक अधिकारी

**श्री निर्मल हज़ारिका**
स्टाफ कार चालक (वि ग्रे)

### अक्तूबर 2023

**श्री सुनिल कुमार**
अनुभाग अधिकारी

**श्री सिरिल पी जे**
सुरक्षा गार्ड

### दिसंबर 2023

**श्रीमती डेस्सीमोल**
अनुभाग अधिकारी

# मेघालय की रबड़ खेती और जेंगिचक्र्रे जिला विकास केंद्र

**डॉ. राजीव एम. तोमस**
सहायक विकास अधिकारी

रबड़ की खेती के क्षेत्र विस्तार में मेघालय भारत में 5 वें और उत्तर-पूर्वी राज्यों में तीसरे स्थान पर है। मेघालय में रबड़ की खेती का क्षेत्रफल 16,610 हेक्टेयर है और उत्पादन 9,540 मेट्रिक टन प्रति वर्ष है। रबड़ के बागान अधिकतर गारो पहाडों में फैले हुए हैं। जयंतिया और खासी पहाडों के ऊंचे हिस्से रबड़ की खेती के लिए उपयुक्त नहीं हैं। इन पर्वत श्रृंखलाओं में मुख्यतः गारो, खासी और जयंतिया जनजाति निवास करते हैं। हालाँकि स्पष्ट रूप से ये पर्वतमालाएँ हिमालय से अलग हैं, फिर भी ये पर्वतमालाएँ पूर्वी हिमालय का हिस्सा है।

पिछले कुछ वर्षों में रबड़ बोर्ड और ऑटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चेर्स एसोसिएशन (एटीएमए) द्वारा संयुक्त रूप से क्रियान्वित 'इंडियन नेचुरल रबर ऑपरेशंस फॉर असिस्टेड डेवलपमेंट' (इनरोड) परियोजना के तहत यहां कई नए क्षेत्रों में रबड़ की खेती का प्रसार किया गया है। मेघालय में रबड़ विकास का समन्वय मुख्य रूप से रबड़ बोर्ड के तुरा प्रादेशिक कार्यालय द्वारा किया जाता है। यहां एक प्रादेशिक अनुसंधान संस्थान भी कार्यरत है। रिभोइ और जयंतिया जिलों में रबड़ विकास का समन्वय गुआहाटी प्रादेशिक कार्यालय से किया जाता है। यह कहा जा सकता है कि पारंपरिक क्षेत्र के विपरीत, उत्तर पूर्वी राज्यों में रबड़ में असामयिक पत्ती झडन की बीमारी नहीं के बराबर है। चूर्णिल आसिता रोग के अलावा, अन्य बीमारियाँ वहाँ कम हैं। आरआरआईएम 600 यहां की लोकप्रिय किस्म है। आरआरआईआई 105, आरआरआईआई 414 और आरआरआईआई 430 किस्मों की भी खेती की जाती है। पारंपरिक क्षेत्र में पिंक रोग की घटना अधिक होने के कारण कम लोकप्रिय आरआरआईआई 429 किस्म की खेती भी यहां सफलतापूर्वक की जाती है। जेंगिचक्र्रे के जिला विकास केंद्र - (डीडीसी) की स्थापना 1987 में की गई थी। इसकी स्थापना मेघालय और अन्य

*जिला विकास केंद्र में पेड़*

*मेघालय में सड़क विक्रेताओं का एक दृश्य*

उत्तर पूर्वी राज्यों के कृषकों और कृषि श्रमिकों को फसलन, प्रसंस्करण, बड्डिंग आदि सहित रबड़ की खेती के सभी पहलुओं में प्रशिक्षण प्रदान करने के इरादे से की गई थी। मेघालय के तत्कालीन मुख्यमंत्री और फिर केंद्र मंत्री और लोकसभा स्पीकर रहे पी ए सांग्मा इस केंद्र की स्थापना के पीछे प्रेरक शक्ति थी। जिला विकास केंद्र, जेंगिचक्ग्रे गांव में 50 वर्षों के लिए पट्टे पर ली गई 43.42 हेक्टेयर भूमि पर स्थित है। **जंगीचक** किस्म के घास अधिक मात्रा में होने के कारण इस गांव का नाम जेंगिचक्ग्रे पड़ा। गारो भाषा में **ग्रे** का मतलब गांव होता है। इसलिए यहां के ज्यादातर गांवों के नाम **ग्रे** में खत्म होते हैं।

1990 तक, जिला विकास केंद्र के मॉडल बागों में पौधा लगाना शुरू किया गया था। (विभिन्न वर्षों में किये गये रोपण का विवरण सारणी 1 में दिया गया है)। आरआरआईएम 600, आरआरआईआई 105, जी.टी. 1 आदि प्रजातियाँ यहाँ लगाई हैं। अधिकांश पौधे आरआरआईएम 600 किस्म के हैं। मेघालय और अन्य उत्तर पूर्वी राज्यों के लिए आवश्यक गुणतायुक्त रोपण सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए यहां पांच हेक्टेयर क्षेत्र में एक रबड़ पौधशाला भी बनाई गई है।

**सारणी - 1**

| रोपण का वर्ष | क्षेत्र विस्तार (हेक्टेयर में ) |
|---|---|
| 1990 | 17.00 |
| 1991 | 4.50 |
| 1992 | 7.00 |
| 1993 | 2.50 |
| **कुल** | **31.00** |

1992 तक जिला विकास केंद्र में कार्यालय, प्रशिक्षण कक्ष और प्रशिक्षणार्थियों के लिए होस्टल जैसी इमारतों का काम पूरा हो गया। रबड़ का फसलन 1998 में शुरू हुआ। शुरुआत में यहां 12,000 पेड़ थे लेकिन अब केवल 5,565 पेड़ों का ही टापिंग किया जा रहा है। विभिन्न वर्षों में हुए चक्रवातों के कारण कई पेड़ नष्ट हो गए हैं।

पिछले कई वर्षों में सैकड़ों कृषक और कृषि श्रमिक यहां से रबड़ की खेती का प्रशिक्षण प्राप्त किए हैं। इस तरह यह केंद्र मेघालय और उत्तर पूर्वी राज्यों में रबड़ की खेती में बड़ा योगदान देने में सक्षम रहा है। जब मेघालय में रबड़ की खेती के बारे में बताते है, तब इन पहाडों में रहने वाले आदिवासी लोगों की खास सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाओं के बारे में नहीं

# रबड़ बोर्ड के लिए आईएसओ 9001:2015 प्रमाणन

भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) द्वारा प्रदत्त आई एस /आई एस ओ 9001: 2015 प्रमाणन रबड़ बोर्ड को तीन वर्षों के लिए नवीनीकृत किया गया। रबड़ बोर्ड को पहला आईएसओ प्रमाणन वर्ष 2020 में प्राप्त हुआ था। देश में आईएसओ प्रमाणन प्रदान करने का कार्य आई.एस.ओ अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (आईएसओ) ने भारतीय मानक ब्यूरो को सौंप दिया है। रबड़ अधिनियम, 1947 के तहत उद्देश्यों को पूरा करने और प्राकृतिक रबड़ क्षेत्र में हितधारकों के हितों की रक्षा के लिए रबड़ बोर्ड द्वारा की गई प्रक्रियाओं और गतिविधियों का मूल्यांकन करने के बाद बीआईएस ने आईएसओ प्रमाणन प्रदान दिया।

आईएसओ 9001:2015 मानकों के अनुसार प्रभावी गुणता प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि किसी संगठन के उत्पाद और सेवाएँ ग्राहकों की आवश्यकताओं को ठीक से पूरा करते है।

---

बताना सही नहीं होगा। वे उन कुछ समुदायों में हैं जो मातृसत्तीय प्रणाली का पालन करते हैं। पुरुषों को संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं हैं। शादी के बाद पुरुष पत्नी के परिवार का हिस्सा बन जाता है। संपत्ति मां से बेटियों को हस्तांतरित होती है। जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति देखी जा सकती है; चाहे सड़क व्यापार हो या खेती।

मेघालय भारत में सर्वाधिक वर्षा मिलने वाला राज्य है। कुल भू-क्षेत्र का 70 प्रतिशत हिस्सा अभी भी वन है। मेघालय जैव विविधता से समृद्ध है और यहां ऑर्किड व्यापक रूप से पाए जाते हैं और रबड़ के पेड़ों में भी ऑर्किड प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। वे आम तौर पर प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर रहते हैं। इसलिए नदियां एवं जलस्रोत स्वच्छ रहते हैं। वे नदियों को कूडे कचडे डालने की जगह के रूप में नहीं देखते हैं। लेकिन अधिकांश की आर्थिक स्थिति ख़राब है क्योंकि अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि केंद्रित है। उद्योग बहुत कम हैं। व्यापार आम तौर पर दूसरे राज्यों से आए लोगों के हाथों में होता है।

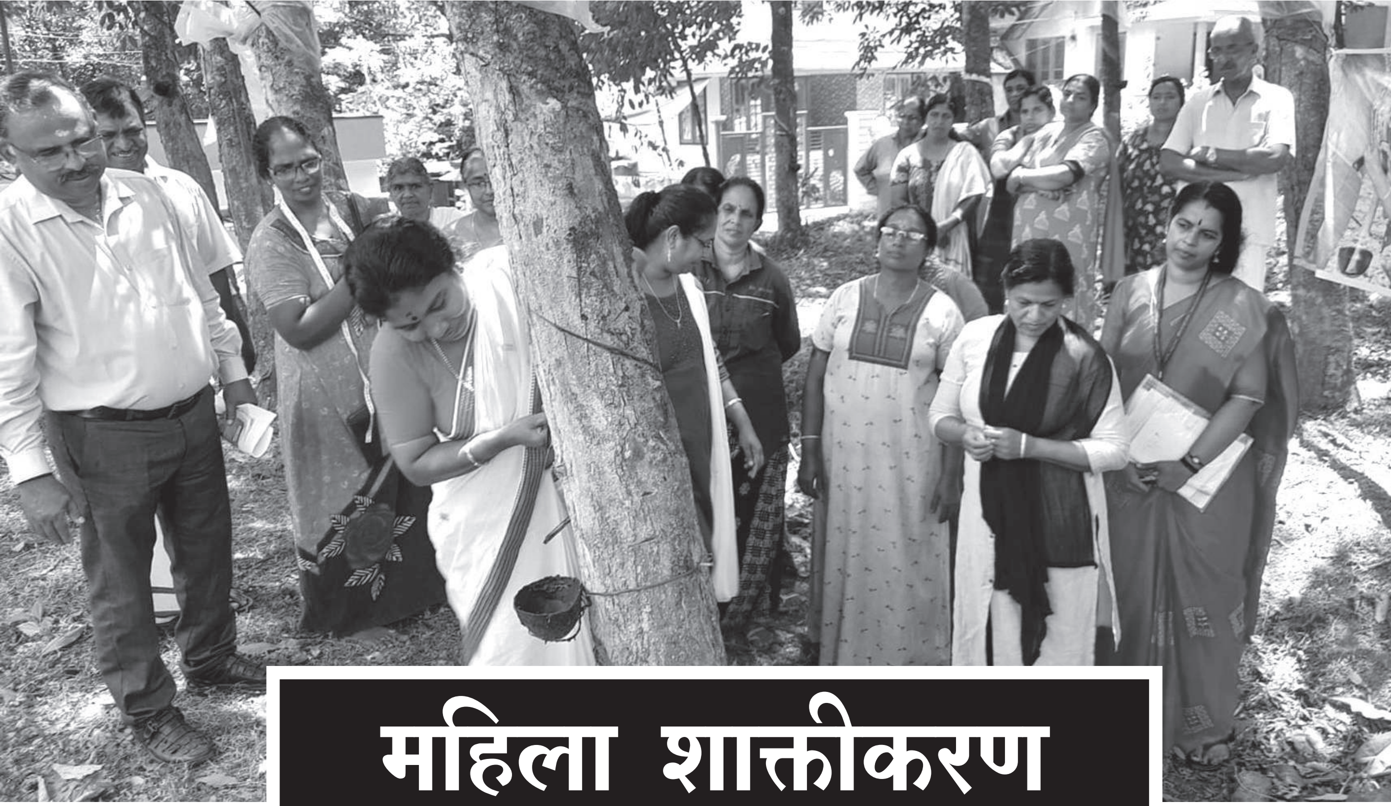

# महिला शाक्तीकरण के लिए जेंडर बजटिंग

**ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को रबड़ टापिंग में प्रशिक्षित करने और उन्हें स्व-रोज़गार करके आय अर्जित करने के लिए सशक्त बनाने के उद्देश्य से रबड़ बोर्ड द्वारा कार्यान्वित जेंडर बजटिंग टापिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए कैसे फायदेमंद है, इसका वर्णन इस लेख में किया है।**

**निर्मलकुमार एस**
विकास अधिकारी

**दीपा सुकुमार**
क्षेत्रीय अधिकारी


आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2021-22 के रिपोर्ट के अनुसार, भारत की श्रम शक्ति में 15 से 29 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं की हिस्सेदारी सिर्फ 32.8 प्रतिशत है। वहीं, पुरुषों की हिस्सेदारी 77.2 प्रतिशत है। महिला समूह, जो भारत की लगभग आधी आबादी है, को सशक्त बनाने और उनके लिए रोजगार के अवसर पैदा करने और पर्याप्त रोजगार की स्थिति प्रदान करने से देश की आर्थिक वृद्धि में तेजी आएगी और विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।

जब रबड़ बोर्ड और राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान ने संयुक्त रूप से 2022 में *जेंडर बजटिंग* के हिस्से के रूप में टापिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू किया, जिसमें महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता हासिल करने के लक्ष्य शामिल हैं, तो इसे महिला समुदाय से बड़े पैमाने पर स्वीकृति मिली। कोविड महामारी के दौरान बेरोजगारी और आर्थिक कमजोरी से पीड़ित ग्रामीण इलाकों में ग्रामीण परिवारों में गृहिणियों के लिए जेंडर बजटिंग टापिंग प्रशिक्षण उत्तरजीविता

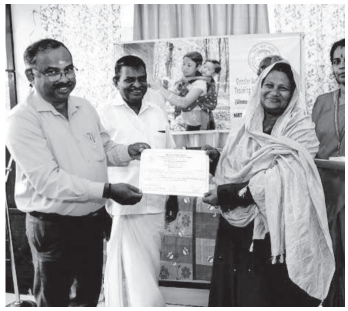

के लिए सहायता बन गई है। महामारी के बाद अन्य राज्यों से टापिंग कर्मचारी वापस नहीं लौटे। परिणामस्वरूप, अपने स्वामित्व के रबड़ बागानों से आय खोयी ज्यादातर महिलाएं इस परियोजना में प्रशिक्षित हैं।

रबड़ बोर्ड के तिरुवनंतपुरम प्रादेशिक कार्यालय के अधिकार क्षेत्र में आने वाले पनप्पांकुन्नु रबड़ उत्पादक संघ में 2022 में दो बैचों में प्रशिक्षण पूरा करने वाले 30 लोगों ने टापिंग के माध्यम से कमाई शुरू कर दी है। इसे एक उदाहरण के रूप में लेते हुए, इस वर्ष के दौरान आर्थिक रूप से वंचित कई बेरोजगार महिलाएं इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए अनुरोध करने के लिए आगे आईं। उनमें से चुने गए 15 लोगों के तीसरे बैच को सितंबर 2023 में पनप्पांकुन्नु में प्रशिक्षित किया गया था।

जेंडर बजटिंग प्रो-विमन टापिंग प्रशिक्षण का समापन सत्र पनप्पांकुन्नु रबड़ उत्पादक संघ के अध्यक्ष श्री पी रामकृष्णकुरुप्पु की अध्यक्षता में आयोजित किया गया था। रबड़ बोर्ड के प्रादेशिक कार्यालय तिरुवनंतपुरम के प्रभारी अधिकारी श्री एस निर्मल कुमार, विकास अधिकारी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। आठ दिवसीय प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा करने वाले 15 प्रशिक्षणार्थियों को राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान द्वारा जारी प्रमाण पत्र और एक टापिंग चाकू सहित एक टूलकिट दिया गया।

2022 में प्रशिक्षण पूरा करने वाले 30 लोगों में से, पांच जिन्होंने अपने स्वामित्व के बागानों में रबड़ के पेड़ों का टापिंग किया या आस-पास के बागानों पर भी टापिंग कार्य किया और प्रति दिन 400 से 700 रुपए की निश्चित मजदूरी की, उन्हें समारोह में सम्मानित किया गया। पांचों सम्मानित लोगों ने अपने अनुभव का वर्णन दूसरों के साथ किया। सुबह तीन बजे टापिंग शुरू होती है और साढ़े सात बजे तक घर लौटकर घर का जरूरी काम निपटाती है। इसके बाद वे बागान पहूंचते हैं और रबड़ का दूध इकट्ठा करके जमने के लिए रख देते हैं। फिर से घर का काम-काज निपटाने के बाद शाम को शीट बनाने के लिए जाती हैं। उन्होंने कहा कि जैसे-जैसे जीवन अधिक व्यवस्थित होता गया, उनके पास अन्य व्यवसायों की तुलना में घर के काम और बच्चों की देखभाल के लिए अधिक समय मिलती हैं। सभी पांचों ने एक सुर में बताया कि रबड़ बोर्ड द्वारा प्रदान किए गए प्रशिक्षण से उन्हें स्थायी नौकरी हासिल करने और दैनिक आय में सुधार करने में मदद मिली है।

किसी देश के सतत विकास और आर्थिक विकास के लिए महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता आवश्यक है। महिलाओं के लिए स्थिर आय सुनिश्चित करने वाले रोजगार के अवसरों के साथ-साथ सभ्य कार्य वातावरण बनाकर महिला सशक्तिकरण हासिल किया जा सकता है। रबड़ कृषि क्षेत्र की वर्तमान प्रमुख चुनौती टापिंग श्रमिकों की कमी को हल करने के प्रभावी तरीकों में से एक ग्रामीण महिला शक्ति को टापिंग क्षेत्र की ताकत के रूप में विकसित करना है।

# योजना, विपणन और प्रशिक्षण विभाग

मात्यु टी. वी.
विकास अधिकारी

रबड़ खेती क्षेत्र के सतत विकास के लिए प्रशिक्षण, योजना और विपणन का महत्वपूर्ण स्थान है। यह लेख क्षेत्रों में रबड़ बोर्ड की गतिविधियों का संक्षेप में वर्णन करता है।

### राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान (एन आई आर टी)

रबड़ की खेती, प्रसंस्करण, विनिर्माण, विपणन और उपभोग के उप-क्षेत्रों में सुधार के लिए, जो प्राकृतिक रबड़ उत्पादन क्षेत्र के बुनियादी घटक हैं, संबंधित क्षेत्रों से संबंधित प्रौद्योगिकियों का उन्नयन और कौशल विकास आवश्यक है। इस प्रकार सभी क्षेत्रों के लिए आवश्यक कौशल विकास हेतु एक स्थायी व्यवस्था के रूप में रबड़ बोर्ड के अधीन प्रशिक्षण विभाग की अवधारणा का गठन किया गया। इस प्रकार 1994 में, प्रशिक्षण विभाग का गठन किया गया। वर्ष 2000 में, विश्व बैंक परियोजना के हिस्से के रूप में सभी बुनियादी सुविधाओं वाला एक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया गया था। वर्ष 2010 में इस प्रशिक्षण केंद्र का नाम बदलकर रबड़ प्रशिक्षण संस्थान (आरटीआई) कर दिया गया। फिर वर्ष 2021 में

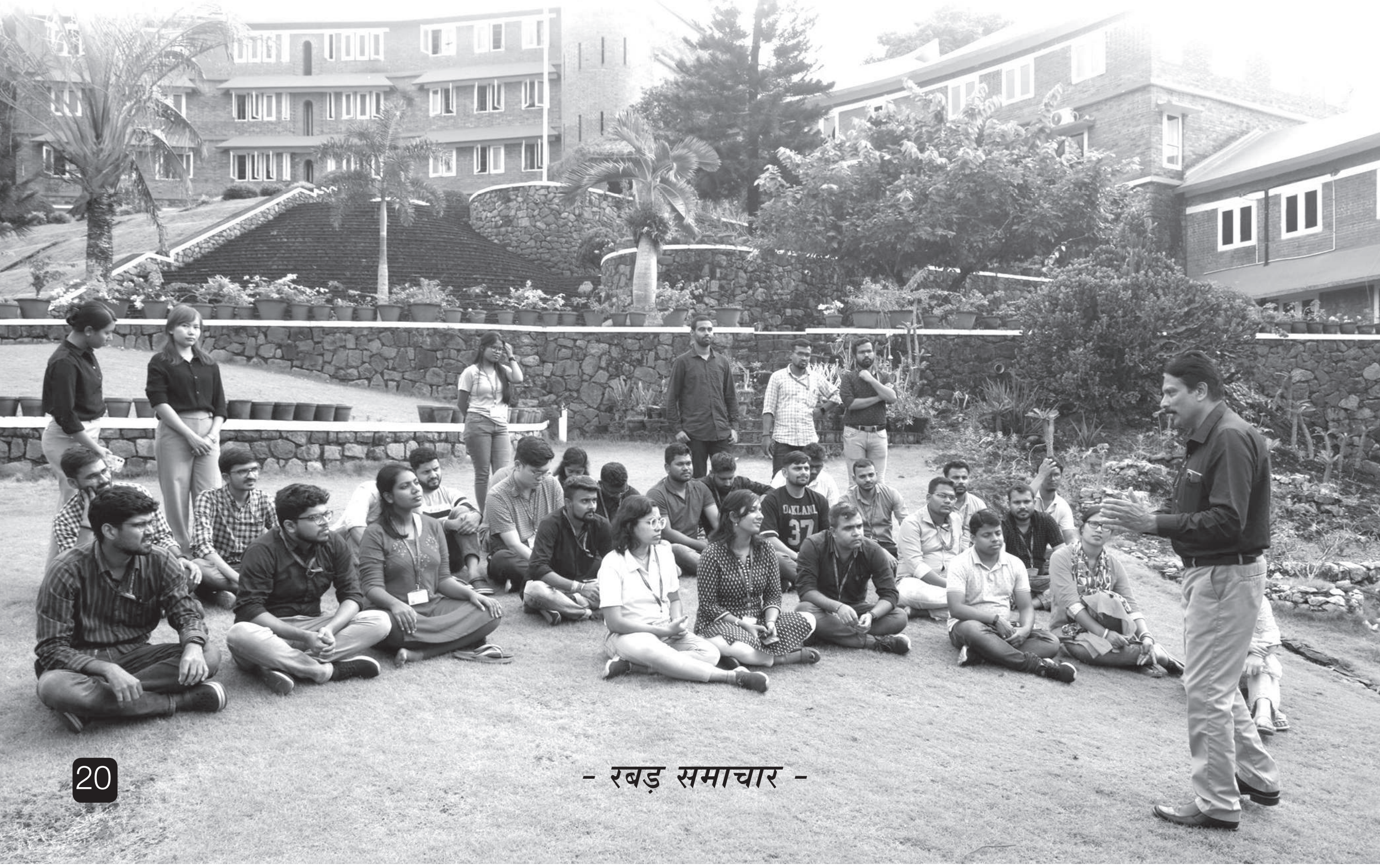

केंद्र सरकार ने रबड़ प्रशिक्षण संस्थान (आरटीआई) को राष्ट्रीय दर्जा देकर राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान (एनआईआरटी) के रूप में प्रोन्नत किया। उत्तर पूर्वी क्षेत्र में राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के संचालन के विस्तार करने के उद्देश्य में वर्ष 2022 में अगर्तला में एक नोडल केंद्र और एक परीक्षण और प्रशिक्षण केंद्र शुरू किया गया है। राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान का मुख्य कार्यालय भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान के पास है। इसमें आधुनिक सुविधाओं से युक्त प्रशिक्षण कक्ष, कंप्यूटर लैब, पुस्तकालय, सभागार, होस्टल और कैंटीन हैं। इसके अलावा तीन प्रदर्शन/प्रशिक्षण प्रयोगशालाएं भी हैं। इसमें लैटेक्स से उत्पादों का निर्माण, शुष्क रबड़ से उत्पादों का निर्माण और गुणवत्ता नियंत्रण/निरीक्षण की सुविधाएं हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नेतृत्व करने के लिए स्थायी प्रशिक्षकों के अलावा कई अन्य विशेषज्ञ जैसे वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीविद्, अभियंता, विस्तार अधिकारी, तकनीकी विशेषज्ञ आदि भी हैं।

राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान आज यह आई एस ओ 9001-2015 प्रमाणित संगठन है। विभिन्न विषयों से संबंधित 75 प्रशिक्षण मॉड्यूल प्रभावी हैं। इनके अलावा, केंद्र और राज्य सरकारों के अधीन विभिन्न एजेंसियों की वित्तीय सहायता से विभिन्न कौशल विकास परियोजनाएं भी संचालित की जा रही हैं। राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षण मुख्यतः चार विभागों में आते हैं। रबड़ बागान विकास प्रशिक्षण (आरपीडीटी), रबड़ उद्योग विकास प्रशिक्षण (आरआईडीटी), रबड़ विस्तार विकास प्रशिक्षण (आरईडीटी) और मानव संसाधन विकास प्रशिक्षण (एचआरडीटी)। इन कार्यक्रमों के सुचारू कार्यान्वयन के लिए पहले से तैयार वार्षिक प्रशिक्षण कैलेंडर के अनुसार प्रशिक्षण आयोजित किए जाते हैं। ऐसे व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान लाभार्थियों को अनोखी सेवा प्रदान करता है।

**रबड़ बागान विकास प्रशिक्षण (आरपीडीटी)**

इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लाभार्थी पारंपरिक, गैर-पारंपरिक और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों के छोटे/मध्यम/बड़े पैमाने के रबड़ कृषक, मजदूर, टैपेर्स, बागान प्रबंधक, पर्यवेक्षी कर्मचारी और महिलाएं हैं। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य रबड़ की खेती के विभिन्न चरणों, विशेष रूप से फसल प्रबंधन, रोग नियंत्रण, कृषि नवीकरण और पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुसार फसल प्रबंधन में उपयुक्त बदलाव लाना जैसे नए निष्कर्षों को पेश करना और लागू करना है।

रबड़ बागानों में अतिरिक्त आय, मधुमक्खी पालन, टापिंग, लैटेक्स प्रसंस्करण, टैपिंग का नवाचार, आंतरायिक टैपिंग, वर्षारक्षण, नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग, उर्वरकों का छिड़काव, विभिन्न प्रकार के स्प्रेयरों की मरम्मत, उर्वरक सिफारिशें,

रोग और कीट नियंत्रण, ऑनलाइन उर्वरक प्रयोग संबंधी सिफारिशें, स्थानीय जलवायु के अनुसार उपयुक्त रोपण सामग्रियों का चुनाव और कृषि संबंधी विषयों की जानकारी इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का एक हिस्सा है। आशा है कि इससे छोटे कृषि क्षेत्र का व्यापक विकास संभव हो सकेगा। 2022-23 के दौरान विभिन्न अवधि के 40 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। इसके जरिये 735 लोगों को प्रशिक्षित किया गया।

**रबड़ उद्योग विकास प्रशिक्षण (आरआईडीटी)**

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य रबड़ विनिर्माण क्षेत्र से संबंधित प्रसंस्करण, उत्पाद निर्माण और विपणन में समय पर प्रशिक्षण प्रदान करना है। प्रौद्योगिकी विकास, गुणवत्ता सुधार और विनिर्माण लागत में कमी लाना आदि विषयों को इन प्रशिक्षणों में प्राथमिकता देता है। ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य नौकरी चाहने वालों के बीच उद्यमिता को बढ़ावा देना, नवीन रोजगार के अवसर पैदा करना और रबड़ उद्योग के लिए कुशल तकनीशियन प्रदान करना है। विश्वविद्यालयों और पेशेवर संस्थानों के साथ सहयोग करने के अलावा, छात्रों और तकनीशियनों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। इस प्रकार वर्ष 2022-23 के दौरान 89 कार्यक्रमों में 1353 लोगों को प्रशिक्षित किया गया।

इस तरह के प्रशिक्षण अनुसंधान संस्थानों के शोधकर्ताओं, रक्षा क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों, व्यक्तिगत उद्यमियों, नौकरी चाहने वालों, रबड़ काष्ठ प्रसंस्करण इकाइयों में कार्यरत व्यक्तियों, निर्यातकों, सरकारी क्षेत्र के अधिकारियों, उत्पादन/गुणता नियंत्रण प्रबंधकों, छात्रों, विदेश प्रतिनिधियों, रबड़ उत्पाद विनिर्माताओं और रबड़ संसाधकों के लिए फायदेमंद होंगे।

**रबड़ विस्तार विकास प्रशिक्षण (आरईडीटी)**

इसमें रबड़ उत्पादक संघ के सदस्य कृषक, निदेशक मंडल सदस्य, नौकरी चाहने वालों, रबड़ विपणन समितियों के कर्मचारी, रबड़ बोर्ड कंपनियों के कर्मचारी, स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों, संग्रहण एजेंटों, रबड़ टैपर समूहों के प्रतिनिधि, समूह संसाधन केंद्रों के श्रमिक, महिलाएं और उद्यमियों के लिए प्रशिक्षण शामिल हैं।

ये प्रशिक्षण विकेंद्रीकृत तरीके से संचालित किये जा रहे हैं। इसमें रोपण पूर्व संचालन, रबड़ रोपण, संरक्षण के अलावा रबड़ की खेती, टैपिंग, लैटेक्स प्रसंस्करण और रोग नियंत्रण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं।

इसके अलावा रबड़ की ई-ट्रेडिंग, संघों का खाता प्रबंधन, पैन कार्ड का पंजीकरण, जी.एस.टी पंजीकरण, रबड़ बोर्ड की श्रमिक कल्याण योजनाएं, उत्पादकता बढ़ाने की गतिविधियां और पूरक आय के तरीकों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे हैं। वर्ष 2022-23 के दौरान 197 ऐसे कार्यक्रमों में 4,667 लाभार्थियों को प्रशिक्षित किया गया है।

**मानव संसाधन विकास प्रशिक्षण (एचआरडीटी)**

इसमें रबड़ बोर्ड के विस्तार अधिकारियों,

रबड़ टापिंग निदर्शकों और अन्य पेशेवरों के लिए प्रशिक्षण शामिल है। सार्वजनिक खरीद और फोट ोग्राफी जैसे विषयों में भी प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। वर्ष 2022-23 में नौ बैचों में 225 लोगों को इस प्रकार का प्रशिक्षण दिया गया है। इस तरह का प्रशिक्षण अधिकारियों को नई चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाता है।

उपर्युक्त चार प्रशिक्षण मॉड्यूल में से कुछ विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अलग से उल्लेख करना आवश्यक है।

## अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए प्रशिक्षण

ऐसे प्रशिक्षण केंद्र सरकार की अनुसूचित जाति उप योजना (एससीएसपी) और जनजातीय उप योजना (टीएसपी) के तहत आयोजित किए जा रहे हैं। समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान और कौशल विकास के लिए ये प्रशिक्षण कार्यक्रम टापिंग, प्रसंस्करण, रबड़-आधारित और सहायक आय धाराओं के विषयों को सम्मिलित करते हैं।

## महिला समर्थक प्रशिक्षण

केंद्रीय वाणिज्य मंत्रालय के निर्देशानुसार महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से आयोजित किया जाने वाला प्रशिक्षण इसी श्रेणी में आता है। विशेष रूप से महिलाओं के लिए आयोजित ये प्रशिक्षण कार्यक्रम रबड़ क्षेत्र में टैपर्स की कमी को दूर करने में सहायक हैं। वर्ष 2022-23 के दौरान 45 बैचों में 685 महिलाओं को टैपिंग प्रशिक्षण दिया गया।

## केंद्र सरकार की प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) कौशल परियोजना

केंद्र सरकार के अधीन कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई), प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई), राष्ट्रीय कौशल विकास परिषद (एनएसडीसी), रबड़ कौशल विकास परिषद (आरएसडीसी) आदि और रबड़ बोर्ड के सहयोग द्वारा संचालित पूर्व सीख को मान्यता (आरपीएल) कार्यक्रम उल्लेखनीय है। इस कार्यक्रम के लिए रबड़ बोर्ड को परियोजना कार्यान्वयन एजेंसी (पीआईए) के रूप में चुना गया था। उसके बाद, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान और रबड़ उत्पादन विभाग द्वारा पूरे भारत में वर्ष 2016 से 2020 तक टापिंग और लाटेक्स प्रसंस्करण जैसी विभिन्न नौकरी भूमिकाओं में आरपीएल कार्यक्रम आयोजित किये गए। इस दौरान 12 राज्यों में 61,196 लोगों को प्रशिक्षित किया गया और 55,640 लोगों को प्रमाणपत्र दिये गये। रबड़ बोर्ड को वर्ष 2016-17, 2017-18 और 2018-19 में रबड़ कौशल विकास परिषद (आरएसडीसी) द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षण भागीदार पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

## अतिरिक्त कौशल अर्जन कार्यक्रम (एएसएपी)

विभिन्न शैक्षणिक योग्यता वाले नौकरी चाहने वालों के लिए केरल सरकार के तहत उच्च शिक्षा विभाग के सहयोग से एएसएपी प्रशिक्षण आयोजित किये जा रहे हैं। अब तक लगभग 800 अभ्यर्थी लाभान्वित हो चुके हैं।

केंद्र सरकार के अधीन हिंदुस्तान मशीन टूल्स इंडिया लिमिटेड के सहयोग से भारत-म्यानमर उद्योग प्रशिक्षण केंद्र नामक परियोजना के कार्यान्वयन के सिलसिले में म्यानमर के अधिकारियों के लिए आयोजित रबड़ प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण को एक महत्वपूर्ण प्रशिक्षण माना जाता है। उपरोक्त सभी परियोजनाएँ विभिन्न एजेंसियों की वित्तीय सहायता से संचालित प्रशिक्षण हैं।

**रबड़ प्रौद्योगिकी पर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (सीसीआरटी)**

यह एक महीने का एक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम है।

**शुष्क रबड़ संघटक (डी.आर.सी) पर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम**

लाटेक्स में शुष्क रबड़ संघटक का निर्धारण रबड़ की विपणन प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्ष 2022-23 के दौरान 10 बैचों में 82 लोगों को शुष्क रबड़ संघटक परीक्षण के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम रोज-गार के नए अवसर पैदा करने में सहायक है।

**योजना प्रभाग**

रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक के सीधे नियंत्रण में योजना प्रभाग कार्य करता है। प्रत्येक योजना अवधि के दौरान रबड़ क्षेत्र में विभिन्न परियोजनाओं के रूपायन, निगरानी और प्रगति के मूल्यांकन आदि हेतु योजना प्रभाग जिम्मेदार है। इसके लिए योजना प्रभाग द्वारा अनुसंधान-विकास और गैर-विकास क्षेत्रों के लिए विभिन्न परियोजनाओं का संहिताकरण और मास्टर प्लान तैयार किया जा रहा है। वर्ष 2023-24 से 2025-26 की अवधि के लिए रबड़ बोर्ड की *रबड़ क्षेत्र का सतत और समग्र विकास* नाम की एक परियोजना केंद्र सरकार को सौंप दिया है।

संसद सत्र के दौरान शून्य काल में रबड़ क्षेत्र से संबंधित नियम 377 के तहत प्रश्नों के उत्तर, सरकार द्वारा संसद को दिए गए आश्वासन, उसके लिए आवश्यक आंकडे, अन्य जानकारी आदि दस्तावेज प्रस्तुत करना योजना प्रभाग के उत्तरदायित्व में शामिल हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग दूसरी बात है। रबड़ क्षेत्र से संबंधित अंतर सरकारी एजेंसियां जैसे मध्य एशिया के कुलालंपुर में कार्यरत प्राकृतिक रबड़ उत्पादक राष्ट्रों के संघ (एएनआरपीसी) और सिंगापुर में कार्यरत अंतर्राष्ट्रीय रबड़ अध्ययन समूह (आईआरएसजी) के साथ सहयोग और सूचना साझा करने से संबंधित गतिविधियां योजना प्रभाग समन्वित करता है।

योजना प्रभाग को नीति निर्माण प्रक्रिया में केंद्र सरकार और रबड़ से संबंधित अन्य एजेंसियों की सहायता करने का भी काम सौंपा गया है।

**विपणन प्रभाग**

रबड़ मूल्य श्रृंखला का एक प्रमुख घटक है विपणन। 20 वीं सदी के आखरी दशक तक भारत को एक सुरक्षित आर्थिक स्थिति हासिल थी लेकिन अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के साथ हम देखते हैं कि बाजार की शक्तियां हमारे वाणिज्यिक क्षेत्र को नियंत्रिक करने में क्षमता रखने वाली प्रमुख शक्ति बनती जा रही हैं। इस प्रकार, वाणिज्य केवल उत्पादों की खरीद और बिक्री से परे प्रौद्योगिकी, गुणवत्ता और बाजार की गतिविधियों के प्रति संवेदनशील प्रतिक्रिया का संयोजन भी बन गया।

उत्पादों की ब्रैंडिंग, छुट्टी व्यापार, गुणता, पता लगाने की क्षमता और अच्छी विनिर्माण प्रणालियां (जीएमपी) आदि उत्पादों को बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए आवश्यक हो गईं। लगातार बदलने वाले बाजार को समझकर कृषकों के उत्पादों को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने और वैश्विक बाजार में अवसरों का फायदा उठाने आदि कार्य विपणन प्रभाग द्वारा किया जा रहा है।

वर्ष 2008 में भारतीय उत्पादों को विदेशी बाज़ारों में पेश करने का कार्यक्रम शुरू किया गया था। फिर वर्ष 2011 में भारतीय रबड़ उत्पादों के लिए ब्रैंडिंग अस्तित्व में आई। भारतीय प्राकृतिक रबड़ ब्रैंड को बढ़ावा देने और बाजार की जानकारी प्रदान करने के लिए एक वेब पोर्टल लॉन्च किया गया था।

कोविड के बाद के समय में रबड़ उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2021 में एक वर्चुअल ट्रेड फेयर' (वीटीएफ) शुरू किया गया था। केंद्र सरकार के निर्देशानुसार

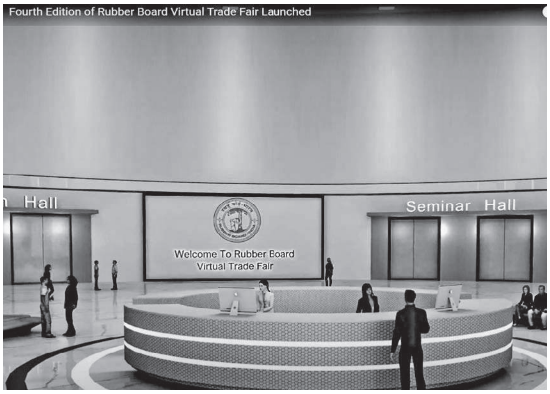


वर्ष 2022 में लॉन्च किया गया रबड़ के लिए एक इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म - एमरूब एक बहुत ही अभिनव कदम है। इस प्रकार, विपणन प्रभाग भारतीय रबड़ क्षेत्र को वैश्विक बाजार आंदोलनों के अनुरूप स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

# हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का उद्घाटन

वर्ष के दौरान हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का सम्मिलित आयोजन 14-15 सितंबर 2023 को श्री शिव छत्रपति स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, बालेवाडी, पुणे में संपन्न हुआ। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित समारोह के उद्घाटन सत्र में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय कुमार मिश्र और राज्य सभा के उप सभापति हरिवंश, स्वास्थ्य राज्यमंत्री डॉ.भारती प्रवीण पवार, एम एस एम ई राज्य मंत्री भानुप्रताप वर्मा और कई सांसद उपस्थित थे। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण ऑनलाइन द्वारा किया तथा विडियो संदेश द्वारा समारोह के लिए शुभकामनाएं दीं। केरल के राज्यपाल आरिफ मुहम्मद खान विशिष्ट अतिथि के रूप में समारोह में भाग लिए। श्री. जी सुनील कुमार, सहायक निदेशक (रा भा), ने रबड़ बोर्ड से प्रतिनिधित्व किया।

# हिंदीः
# एक विश्वस्तरीय संपर्क भाषा

**एम श्रीविद्या**
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

हिंदी भारत की राष्ट्रीय भाषा /राजभाषा होने के नाते ही नहीं, बल्कि एक विश्वस्तरीय संपर्क भाषा के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह एक ऐसी भाषा है जो भारत के साथ ही उसके पड़ोसी देशों, जैसे कि पाकिस्तान, नेपाल, और भूटान, के बीच संपर्क को सुगम और सरल बनाती है। साथ ही, अन्य विदेशी राष्ट्रों में भी हिंदी की मान्यता बढ़ रही है और यहां पर भी हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। पाकिस्तान में हिंदी का उपयोग मात्रा में बहुतायत में होता है। इसके अलावा, नेपाल और भूटान में भी हिंदी का प्रयोग किया जाता है, जैसे कि व्यापार, पर्यटन, और सास्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु। अन्य विदेशी राष्ट्रों में, जैसे कि अरब देशों में, भी हिंदी की मान्यता बढ़ रही है और यहां पर हिंदी के सीखने के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। यह विदेशी राष्ट्रों के बीच संवाद सुगम बना देता है।

भारत विविधताओं से भरा देश है, जिसमें विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों की विभिन्न भाषाएं, संस्कृतियां और परंपराएं शामिल हैं। इतनी विविधता के बावजूद भारतीय समाज को एक सूत्र में बांधने का महत्वपूर्ण साधन हिंदी है। हिंदी न केवल भारत की राष्ट्रीय भाषा है, बल्कि विभिन्न राज्यों में विभिन्न भारतीय भाषा बोलने वालों के बीच आपस में विचार विनिमय करने का माध्यम भी है। इसका मतलब यह है कि हिंदी भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को जोड़ने का एक साधन के रूप में कार्य करती है। हिंदी के प्रयोग से राष्ट्रीय एकता की भावना भी मजबूत होती है। इस भाषा के माध्यम से भारत के लोग अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को एक दूसरे के साथ साझा कर सकते हैं।

हिंदी भारत की जनता के बीच एकता की कडी है, भाषाई बाधाओं को तोड़ती है और विविध भाषाई पृष्ठभूमि वाले लोगों के बीच आपसी संपर्क की सुविधा प्रदान करती है। चाहे वह एक मलयाली, तमिल और एक पंजाबी या एक गुजराती और एक बंगाली के बीच की बातचीत हो, हिंदी भारतीय समाज के ताने-बाने में बुनने वाले सामान्य धागे के रूप में काम करती है, जो सौहार्द की भावना को बढ़ावा देती है।

भारत की सीमाओं से परे हिंदी का प्रसार केवल भाषाई संबंधों तक सीमित नहीं है; इसका विस्तार सांस्कृतिक आदान-प्रदान तक भी है। बॉलीवुड, भारतीय फिल्म उद्योग, जो मुख्य रूप से हिंदी को अपनी प्राथमिक भाषा के रूप में उपयोग करता है, एक शक्तिशाली सास्कृतिक राजदूत के रूप में कार्य करता है, जो न केवल पड़ोसी देशों बल्कि दुनिया भर के दर्शकों को लुभाता। हिंदी संगीत, नृत्य और व्यंजनों की लोकप्रियता भारत और उसके पड़ोसियों के बीच साझा सांस्कृतिक संबंधों को और मजबूत करती है।

हिंदी अवसर की भाषा भी है। हिंदी में प्रवीणता न केवल भारत के भीतर बल्कि उन

**श्रीबिंदु आर एस**
कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी
भा र अ संस्थान, कोट्टयम

# स्वच्छ भारत

स्वच्छता ही सेवा है, स्वच्छता ही सांस है
गाँधीजी का सपना है, मोदीजी का आह्वान है
स्वच्छ भारत, स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर।

हम करेंगे एक साथ, मिल-जुलेंगे एक साथ
सौ घंटे एक साल में हम बितेंगे स्वच्छता की ओर
झाडू ले लो, पोंछ ले लो, सफाई कर लो आसपास
गंदगी को दूर करो, फैलाओ स्वच्छता पूरे देश में

भारत एक अनोखा राज्य है।
विविधता में एकता का स्वरूप है।
इस देश की स्वच्छता अपनाइए

हर भारतवासी ले लो इस प्रतिज्ञा
बीमारी को अलविदा कहो
जीवन के हरेक पल में स्पच्छता फैलाइए।

भारत सरकार द्वारा शुरू किया एक पहल है
स्वच्छ भारत अभियान।
साफ हवा और निर्मल जल हमारा अधिकार है।
साबुन से नहाना, साबुन से हाथ धोना,
शौचालय का उपयोग अपना शील बनाइए।

यह धरती अपनी माता है, पर्यावरण की सुरक्षा
अपनी ही सुरक्षा मान लो।
एक पौधा लगाइए।
इस धरा की हरियाली की रक्षा की प्रतिज्ञा लो।
स्वच्छ भारत के लिए हम एक साथ हाथ जोडेंगे।

---

क्षेत्रों में भी जहां हिंदी का महत्व है, रोजगार, शिक्षा और व्यावसायिक संभावनाओं के द्वार खोलती है। इससे भारत के भीतर और बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासी वाले देशों में हिंदी भाषा की शिक्षा की मांग बढ़ गई है।

जैसे-जैसे हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में विकसित हो रही है, भारत की भाषाई विरासत को संरक्षित और बढ़ावा देने के प्रयास सर्वोपरि हो गए हैं। जबकि हिंदी जोड़ने वाली शक्ति के रूप में कार्य करती है, भारत की विशेषता वाली समृद्ध भाषाई विविधता का जश्न मनाना और उसे संरक्षित करना आवश्यक है। हिंदी को बढ़ावा देने के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों को संरक्षित करने की पहल भाषाई पहचान के सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व को सुनिश्चित करती है।

हिंदी, भाषाई, सांस्कृतिक और भौगोलिक बाधाओं को पार करने की अपनी क्षमता के साथ, भारत की विविधता में एकता के प्रमाण के रूप में खड़ी है। एक संपर्क भाषा के रूप में, यह न केवल भारत के भीतर लोगों को जोड़ती है बल्कि पड़ोसी देशों के साथ दोस्ती और समझ के बंधन को भी बढ़ावा देती है। विभाजनों से भरी दुनिया में, हिंदी एकजुट होने और विभाजन को पाटने की भाषा की शक्ति की याद दिलाती है, एक साझा स्थान बनाती है जहां विविध आवाजें एकता की सिम्फनी में सामंजस्य स्थापित कर सकती हैं।

# बाढ़ और भूस्खलन की आशंका वाले स्थानों के बारे में जानने के लिए वेब जीआईएस पोर्टल

**प्रदीप बी**
भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान

भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान (आरआरआईआई) के स्थापना दिवस के अवसर पर, केरल में रबड़ कृषि वाले क्षेत्रों में बाढ़ की आशंका वाले स्थानों में और मेघालय में रबड़ की खेती वाले क्षेत्रों में भूस्खलन संभावित क्षेत्रों की वेब जीआईएस पोर्टल चालू है और कार्य कर रहा है।

केरल में अधिकांश वर्षों में बाढ़ और भूस्खलन की घटनाएं बार-बार होती रहती हैं। जलवायु परिवर्तन के अनुसार कृषि प्रणालियों में परिवर्तन करना कृषि क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कुछ हद तक कम करने में मदद करेंगी। केरल राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा चलाए अध्ययन से पाया गया है कि केरल और उत्तर पूर्वी राज्य भूस्खलन संभावित क्षेत्र हैं। भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान ने उपग्रह प्रौद्योगिकी की सहायता से बाढ़ और भूस्खलन का विवरण निर्धारित करके उन क्षेत्रों का अध्ययन किया है जहां रबड़ की खेती की जाती है। उसके आधार पर, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान ने केरल डिजिटल विश्वविद्यालय के सहयोग से वेब जीआईएस पोर्टल विकसित किये हैं। इनमें से एक केरल के रबड़ उत्पादक क्षेत्रों में बाढ़ संभावित क्षेत्रों को जानने के लिए एक पोर्टल है। इस पोर्टल में केरल के प्रत्येक जिले के बाढ संभावित क्षेत्रों के रबड़ की खेती करने वाली जगहों की जानकारी उपलब्ध है। साथ

ही, रबड़ बागानों को बाढ़ के खतरे से बचाने के लिए अपनाई जाने वाली कृषि प्रणालियों के बारे में भी इस पोर्टल से जाना जा सकता है।

चित्र 1 में कोट्टयम जिले के बाढ़ संभावित क्षेत्रों में रबड़ की खेती वाली जगहों को दर्शाया है। नीला रंग बाढ़ संभावित क्षेत्रों को दर्शाता है। लाल रंग बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में रबड़ की खेती का संकेत देता है। हरा रंग गैर-बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में रबड़ की खेती को दर्शाया है। केरल के सभी चौदह जिलों के बाढ़ संभावित क्षेत्रों में रबड़ की खेती के बारे में जानने के लिए यह पोर्टल (https://floodmap.rubberboard.org.in) इस्तेमाल कर सकते है। रबड़ बोर्ड द्वारा हाल में लॉन्च किया गया एंड्रॉइड ऐप, क्रिस्प CRISP (कॉम्प्रिहेंसिव रबर इंफॉर्मेशन सिस्टम पोर्टल) पर भी यह टूल उपलब्ध है।

दूसरे पोर्टल में मेघालय के भूस्खलन संभावित क्षेत्रों में रबड़ की खेती की जानकारी है। मेघालय में जिला स्तर पर भूस्खलन के निम्न, मध्यम और उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों की जानकारी इस पोर्टल पर उपलब्ध है। इसके अलावा, भूस्खलन की संभावना और प्रभाव को कम करने के लिए अपनाई जाने वाली अच्छी कृषि प्रणालियां और सिफ़ारिशें भी इस पोर्टल (https://lszrubberboard.org.in) में उपलब्ध हैं।

चित्र 2, मेघालय में पूर्वी गारो हिल्स जिले में रबड़ कृषि करने वाले क्षेत्रों में भूस्खलन की संभावना और वहां अपनाई जाने वाली कृषि प्रणालियों को दर्शाता है। पोर्टल पर 'सिफारिश देखें' लिंक के माध्यम से, बाढ़ और भूस्खलन की संभावना वाले क्षेत्रों में रबड़ कृषकों द्वारा अपनाई जाने वाली कृषि प्रणालियों की जानकारी उपलब्ध है। ये दोनों पोर्टल केरल डिजिटल विश्वविद्यालय के सहयोग से विकसित किए गए हैं। यह पोर्टल भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी और सूचना संचार और प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का एक एकीकृत ऐप्लिकेशन है।

इसके अलावा भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम वसंतगेशन, आई आर एस द्वारा केरल और मेघालय के भूस्खलन संभावित क्षेत्रों के रबड़ की खेती के विस्तार की जानकारी वाली पुस्तक प्रकाशित की गई है। केरल और मेघालय के भूस्खलन संभावित क्षेत्रों में रबड़ बागानों के विस्तार पर विस्तृत जानकारी पुस्तक प्रदान करती है। केरल के सभी पंचायतों के निम्न, मध्यम और उच्च भूस्खलन संभावित क्षेत्रों में रबड़ की खेती की जानकारी और मेघालय के भूस्खलन संभावित क्षेत्रों में रबड़ की खेती के बारे में जिलेवार विस्तृत जानकारी और भूस्खलन वाली जगहों में रबड़ कृषकों द्वारा अपनाई जाने वाली कृषि प्रणालियों के विवरण पुस्तक में है। पुस्तक, रबड़ बोर्ड की वेबसाइट (http://rubberboard.org.in) पर भी उपलब्ध है।

# थोड़ा सा ध्यान देने से निवल लाभ में सुधार हो सकता है

**सुजा एस नायर**
सहायक विकास अधिकारी

रबड बाज़ार हमेशा गतिशील और अक्सर नियंत्रण से बाहर रहता है। रबड़ की कीमतों में उतार-चढ़ाव कृषकों के लिए दिक्कतें पैदा करता है और उनकी आजीविका को प्रभावित करता है। कई कारक हैं जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रबड़ की कीमत को नियंत्रित करते हैं। रबड़ की मांग और उपलब्धता के बीच का अंतर इनमें से एक महत्वपूर्ण कारक है।

इस उत्पाद की एक खासियत यह है कि बाजार में आने वाले किसी भी प्रकार के प्राकृतिक रबड की मांग होती है। हालाँकि, कृषकों को यह भी सोचना है कि रबड़ की खेती को लाभप्रद ढंग से कैसे जारी रखा जा सकता है। कृषि लाभदायक बनाने के लिए खेत से निवल आय बढ़नी चाहिए। रबड़ का उत्पादन रबड़ की किस्म, जलवायु और उपज प्रबंधन प्रथाओं जैसे कारकों पर निर्भर करता है। जलवायु परिवर्तन का असर खेती पर भी पड़ रहा है। ऐसे में जहां जलवायु में भारी बदलाव हो रहा है, अगर कृषक उपज प्रबंधन पर ध्यान नहीं देंगे तो उत्पादन में काफी कमी आएगी।

यह देखा जा सकता है कि रबड़ की कीमत में कमी ने कृषकों को फसल प्रबंधन प्रथाओं को अपनाने से कुछ हद तक रोक दिया है।

रबड़ के पेडों से अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए टाप करने वाले पेडों के प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पेड़ों को खाद डालने, टापिंग करने, और टापिंग के अंतराल को समायोजित करने में सावधानी बरतनी चाहिए। उर्वरक लगाने से पहले बगीचे में उगी झाड़ियों को काट देना चाहिए और बगीचे को साफ करना चाहिए।

वर्षा की उपलब्धता पुराने कृषि कलैंडर से भिन्न देखी जा सकती है। जलवायु में इस

बदलाव ने कृषि को काफी प्रभावित किया है। मौजूदा हालात में अप्रैल से दिसंबर तक बारिश हो सकती है। इसलिए पेड़ों का वर्षारक्षण करना अति आवश्यक है।

यदि बागान में केवल 30-40 टापिंग दिन मिलते हैं, तो रबड़ की खेती निश्चित रूप से लाभदायक नहीं होगी। अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए वर्ष में कम से कम नियमित रूप से 80-90 दिन की टापिंग की आवश्यकता होती है। 2500-3000 किलोग्राम उत्पादकता वाले कुछ बागानों का निरीक्षण करने से पाया गया कि उन सभी बागानों में नियमित अंतराल पर 90 से 100 टापिंग दिनों में टापिंग किया जा रहा है। महीने में आठ या नौ टापिंग (सप्ताह में दो टापिंग) के रूप में टापिंग को समायोजित किया जा सकता है। कम कीमत के दौरान कृषक आमतौर पर उर्वरकों का प्रयोग नहीं करते हैं। अन्य फसलों की तुलना में रबड़ के लिए आवश्यक उर्वरक की मात्रा बहुत कम होती है। यानी प्रति हेक्टेयर 65 किलोग्राम यूरिया, 110 किलोग्राम राजफोस और 50 किलोग्राम पोटाश पर्याप्त होगा। साल में दो बार इसका प्रयोग करना चाहिए।

इसी तरह, कृषकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पेड़ों का टापिंग त्रुटिहीन हो। यदि इन तरीकों को अपनाया जाए तो उत्पादकता 1000 किलोग्राम/हेक्टेयर से 2000 किलोग्राम/हेक्टेयर तक बढ़ाई जा सकती है। कृषक यदि संभव हो तो स्वयं टापिंग करने के लिए तैयार रहेंगे तो, इसमें कोई संदेह नहीं है कि रबड़ की खेती को लाभदायक बनाया जा सकता है।

कीमतों में उतार-चढ़ाव में कृषक हस्तक्षेप करने में सक्षम नहीं हैं। हालाँकि, यदि वैज्ञानिक प्रबंधन प्रथाओं को अपनाने पर रबड़ की खेती लाभप्रद रूप से की जा सकती है।

# रबड़ शब्दावली

1. हीविया ब्रसीलियन्सिस - रबड़ के पेड का वैज्ञानिक नाम

   Hevea brasiliensis: The scientific name for the rubber tree

2. रबड़ क्लोनल सीरीज़ (आरसीएस): आरआरआईआई द्वारा विकसित रबड़ पेड़ के चयनित क्लोनों की एक श्रृंखला, जो अपने विशिष्ट गुणों जैसे उच्च लाटेक्स उपज, रोग प्रतिरोध क्षमता और अनुकूलन क्षमता के लिए जानी जाती है।

   Rubber Clonal Series (RCS): A series of selected clones of the rubber tree developed by RRII, known for their specific traits such as high latex yield, disease resistance and adaptability.

3. बडवुड : रबड़ के पेड़ का वह भाग जिसका उपयोग वंश वृद्धि के लिए किया जाता है, जिसमें आमतौर पर एक कलिका या कलिका युक्त-छड़ी होती है। रबड़ के बागानों में वांछित विशेषताओं को बनाए रखने के लिए उच्च गुणता वाली बडवुड महत्वपूर्ण है।

   Budwood: The part of the rubber tree used for propagation, typically consisting of a bud or bud-stick. High-quality budwood is crucial for maintaining the desired characteristics in rubber plantations.

4. लाटेक्स : रबड़ के पेड़ से प्राप्त दूध - सफेद रस, जो प्राकृतिक रबड़ उत्पादन के लिए प्राथमिक कच्चा माल है।

   Latex: The milky white sap obtained from the rubber tree, which is the primary raw material for natural rubber production.

5. टापिंगः रबड़ के पेड़ की छाल में चीरा लगाकर लाटेक्स निकालने की प्रक्रिया। पेड़ को नुकसान पहूंचाए बिना लाटेक्स उपज को अधिकतम करने के लिए उचित टापिंग तकनीक आवश्यक है।

   Tapping: The process of extracting latex from the rubber tree by making incisions in the bark. Proper tapping techniques are essential for maximizing latex yield without causing harm to the tree.

6. कप-लंप प्रसंस्करणः पेड़ से जुडे कपों में लाटेक्स इकट्ठा करने की एक विधि।

   Cup-lump processing: A method of collecting latex in cups attached to the tree.

7. अपकेंद्रीकरण (सेंट्रिफ्यूगेशन) : अपकेंद्रीय बल का उपयोग करके लाटेक्स को उसके घटकों, जैसे रबड़ कणों और सीरम में अलग करने की प्रक्रिया।

   Centrifugation: The process of separating latex into its components, such as rubber particles and serum, using centrifugal force.

8. रबड़ अनुसंधान स्टेशन : प्रजनन, कृषि विज्ञान और रोग प्रबंधन सहित रबड़ की खेती के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान करने के लिए आरआरआईआई द्वारा स्थापित सुविधाएं

   Rubber Research Stations: Facilities established by RRII for conductng research on various aspects of rubber cultivation, including breeding, agronomy, and disease management.

# रबड़ शब्दावली

9. बागान प्रबंधनः रबड़ की खेती में शामिल तकनीकें व प्रणालियां और मृदा प्रबंधन, उर्वरक का प्रयोग और कीट नियंत्रण सहित रबड़ बागान का अनुरक्षण

Plantation Management: Techniques and practices involved in the cultivation and maintenance of rubber plantations, including soil management, fertilization, and pest control.

10. रोग प्रतिरोधः अनुसंधान रबड़ पौधे के ऐसे क्लॉन विकसित करने पर केंद्रित है जो दक्षिण अमेरिकी लीफ ब्लाइट (एसएएलबी) और पेस्टलोटिओप्सिस पत्ती झडन जैसी बीमारियों के प्रतिरोधी हैं।

Disease Resistance: Research focused on developing rubber tree clones that are resistant to diseases such as South American Leaf Blight (SALB) and Pestalotiopsis leaf fall.

11. गुणता मानक : प्राकृतिक रबड़ के श्रेणीकरण और गुणता नियंत्रण के लिए रबड़ बोर्ड द्वारा निर्धारित विशिष्टताएं और मानक।

Quality Standards: Specifications and standards set by the Rubber Board for the grading and quality control of natural rubber.

12. साउथ अमेरिकन लीफ ब्लाइट (एसएएलबी): माइक्रोसाइक्लस यूली के कारण होने वाला एक कवक रोग, जो रबड़ के पेड़ की पत्तियों को प्रभावित करता है। इससे पत्ते झड़ सकते हैं और लाटेक्स उपज में काफी कमी आ सकती है।

South American Leaf Blight (SALB): A fungal disease caused by Microcyclus ulei, which affects the leaves of the rubber tree. It can lead to defoliation and a significant reduction in latex yield.

13. पेस्टालोटिऑप्सिस पत्ती झडन (पीएलएफ): पेस्टालोटिऑप्सिस प्रजाति के कारण होने वाला एक अन्य कवक रोग, जिसके परिणामस्वरूप पत्तियां गिरती हैं और रबड़ के पेड़ के समग्र स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं।

Pestalotiopsis Leaf Fall (PLF): Another fungal disease caused by Pestalotiopsis spp., resulting in leaf fall and affecting the overall health of the rubber tree.

14. कोरिनेस्पोरा पत्ती झडन (सीएलएफ): कोरिनेस्पोरा कैसिकोला कवक के कारण होने वाली बीमारी, जिससे पत्तियां गिरती हैं, पत्ते झड़ते हैं और लाटेक्स उत्पादन में गिरावट आती है।

Corynespora Leaf Fall (CLF): A disease caused by the fungus Corynespora cassiicola, leading to leaf fall, defoliation, and a decline in latex production.

15. गुलाबी रोग : कॉर्टिसियम साल्मोनिकलर के कारण होने वाला एक जीवाणु रोग, जिसमें छाल और तन पर गुलाबी रंग की वृद्धि होती है, जिससे लाटेक्स की उपज में कमी आती है।

Pink Disease: A bacterial disease caused by Corticium salmonicolor, characterized by pinkish growth on the bark and stem, leading to a decrease in latex yield.

# राजभाषा नियम 1976

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केंद्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थातः-

**नियम 1**. संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ – इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा नियम, 1976 है।

इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय संपूर्ण भारत पर है। ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

**नियम 5**. हिंदी में पत्रादि के उत्तर केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिए जाएंगे।

**नियम 6**. हिंदी और अंग्रज़ी दोनों का प्रयोग - अधिनियम की धारा 3 की उपधारा 3 में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा आर ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती है और जारी की जाती है।

**नियम 7**. आवेदन, अभ्यावेदन आदि - कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेजी में कर सकता है।

**नियम 8**. केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणी का लिखा जाना - कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है आर उनसे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उस्का अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करें।

**नियम 9**. हिन्दी में प्रवीणता - यदि किसी कर्मचारी ने - मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या केंद्र सरकार की पारंगत परीक्षा उत्तीर्ण हुई है यदि वह इन नियमों से उपबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है ।

**नियम 10**. हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान - (1) यदि किसी कर्मचारी ने - मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या केंद्र सरकार की प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के संबंध में योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या केंद्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

(4) केंद्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों में अस्सी प्रतिशत हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे;

**नियम 11** मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि - केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल,

# आलू मटर

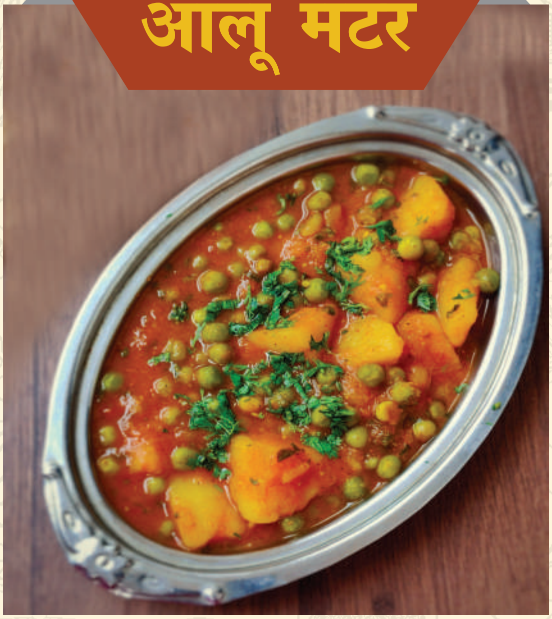

**सामग्रियां**

2 कप (उबले हुए) आलू (क्यूब्स)
2 कप मटर
3-4 कटा हुआ हरी मिर्च
250 ग्राम प्याज
1 टी स्पून लहसुन की कलियां, छिला हुआ
1 टी स्पून अदरक
125 ग्राम टमाटर, कटा हुआ
1/4 कप तेल
2 टी स्पून जीरा
2 तेजपत्ता
1/2 टी स्पून हल्दी पाउडर
1 टेबल स्पून नमक
1/2 टी स्पून गरम मसाला
1/2 टी स्पून कालीमिर्च
1 टेबल स्पून धनिया पाउडर
1 टेबल स्पून हरा धनिया, टुकडों में कटा हुआ

**विधि**

1. तेल गरम करें और इसमें जीरा और तेजपत्ता डालें।
2. जब जीरा चटकने लगे तो इसमें प्याज का पेस्ट डालकर तेल अलग होने तक भूनें।
3. इसमें टमाटर की प्यूरी, हल्दी, नमक, गरम मसाला, लाल मिर्च और धनिया पाउडर डालकर मसालें को अच्छी तरह भूनें।
4. इसमें मटर, आलू और हरी मिर्च डालकर तेज आंच पर भूनें।
5. इसमें दो कप पानी डालें, एक उबाल आने दे और धीमी आंच पर 10 से 15 मिनट के लिए पकाएं।
6. हरा धनिया डालकर गार्निश करें और गर्मागर्म सब्जी सर्व करें

संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिंदी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित और साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

**नियम 12**. 1. अनुपालन का उत्तरदायित्व - केंद्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह - 1. यह सुनिश्चित करें कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है - और इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करें। केंद्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों के संयक् अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकते है।

# हिंदी दिवस समारोह

**प्रादेशिक कार्यालय अडूर** में 20 सितंबर 2023 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती मिनी, हिंदी अध्यापिका, होली एंजेल्स इंग्लिश हायर सेकेंडरी स्कूल, अडूर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्रीमती उमादेवी सी एन, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। श्रीमती सैनी रेजी, क्षेत्रीय अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

**I. टिप्पण एवं आलेखन**

श्री/श्रीमती

प्रथम - सैनी रेजी, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - आदित्या सोमशेखरन पिल्लै, कनिष्ठ सहायक

तृतीय - जयश्री एम आर, स. विकास अधिकारी

**II. कवितापाठ**

प्रथम - जयश्री एम आर, स. विकास अधिकारी

द्वितीय - राजीवकुमार आर, रबड़ टापिंग निदर्शक

तृतीय - आदित्या सोमशेखरन पिल्लै, कनिष्ठ सहायक

**III. भाषण**

प्रथम - सैनी रेजी, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - जयश्री एम आर, स. विकास अधिकारी

तृतीय - आदित्या सोमशेखरन पिल्लै, कनिष्ठ सहायक

**प्रादेशिक कार्यालय कोट्टारक्करा** में 22 सितंबर 2023 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती सुप्रभा टी एस, अध्यापिका, आर वी एच एस, वालकम प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। जोण सक्करिया विकास अधिकारी ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

**I. टिप्पण एवं आलेखन**

श्री/श्रीमती

प्रथम - बिंदु पी एस, क. सहायक ग्रेड 1

द्वितीय - चित्रा एस, परिचर

तृतीय - राहुल आर वी, कनिष्ठ सहायक

**II. कवितापाठ**

प्रथम - जयचंद्रन के जी, स्टाफ कार चालक

द्वितीय - एस गोपालकृष्णन चेट्टियार, रबड़ टापिंग निदर्शक

तृतीय - बिंदु पी एस, क. सहायक ग्रेड 1

---

**प्रादेशिक कार्यालय सिलचर** में 5 अक्तूबर 2023 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती समराग्नी, भट्टाचार्जी, हिंदी अध्यापिका, मातंगिनी हिंदी विद्यालय, सिलचर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्रीमती रश्मी रेखा मजूमदार, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

**I. टिप्पण एवं आलेखन**

श्री/श्रीमती

प्रथम - अजोय कुमार सिरोहिया, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - दयाल कुमार लहकर, व.रबड़ टापिंग निदर्शक

तृतीय - शुभम भुईन, क्षेत्रीय अधिकारी

**II. निबंध लेखन**

प्रथम - अभिलाष बी एस, सर्वेक्षक

द्वितीय - नरेंद्र कुमार बैरवा, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - आन्टणी के ए, अनुभाग अधिकारी

**III. कवितापाठ**

प्रथम - बिप्लब कांति देबनाथ, प्रक्षेत्र सहायक

द्वितीय - लैशराम याइफाबा मेइती, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - सनातना सेथी, प्रक्षेत्र अधिकारी

**IV. भाषण**

प्रथम - सनातना सेथी, प्रक्षेत्र अधिकारी

द्वितीय - लैशराम याइफाबा मेइती, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - सुकल्याण दत्ता गुप्ता, स.विकास अधिकारी

**V. हिंदी गीत**

प्रथम - शुभम भुईन, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - दयाल कुमार लहकर, व.रबड़ टापिंग निदर्शक

तृतीय - सुकल्याण दत्ता गुप्ता, स.विकास अधिकारी

---

**प्रादेशिक कार्यालय मण्णाक्कार्ड** में 27 सितंबर 2023 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री के विजयन, एचएसए (सेवानिवृत्त), के टी एम एच एस मण्णाक्कार्ड प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री सी बी मधु, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त (प्रभारी) ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। श्रीमती पी गीता, सहायक विकास अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

**I. टिप्पण एवं आलेखन**

श्री/श्रीमती

प्रथम - पी अनिता, सहायक

द्वितीय - पी गीता, स. विकास अधिकारी

तृतीय - सी सुमती, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1

**II. कवितापाठ**

प्रथम - सी सुमती, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1

द्वितीय - पी अनिता, सहायक

तृतीय - अरविंद एम, कनिष्ठ सहायक

---

**प्रादेशिक कार्यालय जोरहट** में 04 अक्तूबर 2023 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री अलकनंदा चौधरी, गर्वनमेंट बोय्स हायर सेकेंडरी स्कूल, जोरहट प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्रीमती वत्सला मात्तुक्कल, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। उप रबड़ उत्पादन आयुक्त, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त और निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। श्री सुशील कुमार, क्षेत्रीय अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

**I. टिप्पण एवं आलेखन**

श्री/श्रीमती

प्रथम - सुशील कुमार, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - प्रतीक कुमार, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - देबकृष्ण सैकिया, क्षेत्रीय अधिकारी

**II. निबंध लेखन**

ाथम - सुशील कुमार, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - प्रशांत देबरोय, प्रभारी उप र उ आयुक्त
तृतीय - प्रतीक कुमार, क्षेत्रीय अधिकारी

**III. कवितापाठ**

प्रथम - प्रशांत देबरोय, प्रभारी उप र उ आयुक्त
द्वितीय - भुबन चंद्र बोरा, सहायक
तृतीय - नृपन बरुवा, सर्वेक्षण अधिकारी

**IV. भाषण**

प्रथम - संजेनबाम शेर सिंग, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - प्रशांत देबरोय, प्रभारी उप र उ आयुक्त
तृतीय - बिद्युत गोगोय, रबड़ टापिंग निदर्शक

---

**प्रादेशिक कार्यालय पाला** में 29 सितंबर 2023 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती मंजु के एम, एच एस ए, मुस्लिम गेर्ल्स हाई स्कूल, ईराट्टुपेट्टा प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री षाजु वी पोल, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। उप रबड़ उत्पादन आयुक्त और निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

**I. टिप्पण एवं आलेखन**

श्री/श्रीमती
प्रथम - मिनिकुमारी, सहायक
द्वितीय - मेर्ली तोमस, क. सहायक ग्रेड 1
तृतीय - विनोब बाबु टी पी, स. विकास अधिकारी

**II. कवितापाठ**

प्रथम - विनोब बाबु टी पी, स. विकास अधिकारी

द्वितीय - सुजा एस नायर, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - ललिता एम जी, अनुभाग अधिकारी

---

**प्रादेशिक कार्यालय चंगनाश्शेरी** में 27 सितंबर 2023 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री तरियन जोर्ज, एचएसएसटी, गर्वमेंट मोडेल हायर सेकेंडरी स्कूल, कोट्टयम प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री कुरुविला चेरियान, विकास अधिकारी ने समारोह की अध्यक्षता की। श्रीमती षीबा जोर्ज, सहायक विकास अधिकारी ने स्वागत भाषण किया। श्रीमती पोन्नम्मा पी के, अनुभाग अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

**I. टिप्पण एवं आलेखन**

श्री/श्रीमती
प्रथम - षाजिनी आर, क.सहायक ग्रेड 1
द्वितीय - गोपकुमार आर, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - सौमिनी एम एस, क. सहायक ग्रेड 1

**II. कवितापाठ**

प्रथम - एलिज़बेत वी चेरियान, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - चंद्रलेखा के, स. विकास अधिकारी
तृतीय - षाजिनी आर, क.सहायक ग्रेड 1

**III. भाषण**

प्रथम - कुरुविला चेरियान, विकास अधिकारी
द्वितीय - एलिज़बेत वी चेरियान, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - षाजिनी आर, क.सहायक ग्रेड 1

# अर्थशास्त्र नोबेल पुरस्कार

## वासिली डब्ल्यू लिओनटिफ

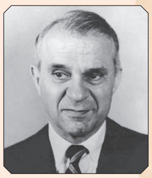

पुरस्कार वर्ष : 1973
जन्म : 5 अगस्त, 1906
मृत्यु : 5 फरवरी, 1999
राष्ट्रीयता : रूसी/अमरीकी

लेनिनग्राड में जन्मे इस अर्थशास्त्री ने अर्थशास्त्र में निवेश और उत्पादन संबंधी विश्लेषण को विकसित किया। इसीलिए उन्हें 1973 का अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार दिया गया।

## गुन्नार मिर्डल

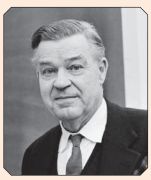

पुरस्कार वर्ष : 1974
जन्म : 6 दिसंबर, 1898
मृत्यु : 17 मई, 1987
राष्ट्रीयता : स्वीडिश

गुन्नार मिर्डल को फ्रेडरिक आगस्त वान हाइक के साथ 1974 का अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार दिया गया। मिर्डल ने आर्थिक रूप से एक-दूसरे पर आश्रित होने तथा सामाजिक और संस्थागत प्रश्नों पर प्रकाश डाला। इन्होंने 'एशियन ड्रामा : एन इन्क्वायरी इनटु द पावर्टी आफ नेशन्स' (1968) पुस्तक भी लिखी।

## फ्रेडरिक आगस्त वान हाइक

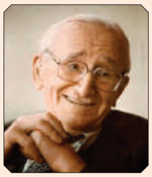

पुरस्कार वर्ष : 1974
जन्म : 8 मई, 1899
मृत्यु : 23 मार्च, 1992
राष्ट्रीयता : आस्ट्रियन/ब्रिटिश

इन्होंने आर्थिक क्षेत्र की आपसी निर्भरता और उसके संस्थागत कार्यों का महत्वपूर्ण विश्लेषण किया। इन्हें गुन्नार मिर्डल के साथ 1974 का अर्थशास्त्र नोबेल पुरस्कार दिया गया।

## लियोनिद केन्तोरोविच

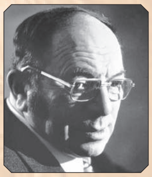

पुरस्कार वर्ष : 1975
जन्म : 19 जनवरी, 1912
मृत्यु : 9 अप्रैल, 1986
राष्ट्रीयता : रूसी

इस रूसी अर्थशास्त्री ने द बेस्ट यूज़ आफ इकनामिक रिसोर्सेज़ नामक एक पुस्तक 1959 में रूसी भाषा में लिखी। इसका अंग्रेजी अनुवाद 1965 में हुआ। इसी पर इन्हें नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

## जालिंग सी कुपमान्स

पुरस्कार वर्ष : 1975
जन्म : 28 अगस्त, 1910
मृत्यु : 28 फरवरी, 1985
राष्ट्रीयता : डच/अमरीकी

इन्हें लियोनिद केन्तोरोविच के साथ 1975 का नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। इन्होंने अर्थव्यवस्था के लिए साधनों के अधिक से अधिक उपयोग के सिद्धांत का विशद विवेचन किया।

## मिल्टन फ्रीडमैन

पुरस्कार वर्ष : 1976
जन्म : 31 जुलाई, 1912
मृत्यु : 16 नवंबर, 2006
राष्ट्रीयता : अमरीकी

इन्होंने आर्थिक क्षेत्र में वित्तीय उपभोग, वित्तीय सिद्धांत और आर्थिक स्थिरता आदि बातों पर विशेष प्रकाश डाला। इन्हें चौंसठ वर्ष की आयु में नोबेल पुरस्कार दिया गया।

Penta Offset, KTM. 0481-2583959